नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

नई दुनिया के रचयिता, सर्व के कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव की अति प्रिय सन्तान बहनो तथा भाइयो,

पुरानी दुनिया में, नववर्ष का आगमन, नये युग और नये कल्प की स्मृतियों को ताजा कर रहा है। पुराने और नये के मिलन की इस संगम वेला में सर्व नकारात्मक स्वभाव-संस्कार से मुक्त हो बेदाग हीरा बनने वाले आप सभी ज्ञान-हंसों को बहुत-बहुत बधाइयाँ हों।

वर्तमान समय की मांग है कि हम ईश्वरीय स्नेह की डोर को मजबूत बनाकर, निश्चय के आधार से प्रीतबुद्धि विजय माला के मणके बन त्याग, तपस्या, सेवा द्वारा सर्वसुखों से भरपूर स्वर्णिम युग का नज़ारा सबके सामने प्रत्यक्ष करें।

पुरानी और परायी बातों को बिन्दी लगाकर, श्रेष्ठ कर्म द्वारा श्रेष्ठ संस्कार बनाएँ। अब घर जाने का समय है अत: ध्यान रहे, कोई भी नया हिसाब-किताब न बने, पुराना भी याद के बल से चुक्ता होता जाये।

वर्तमान समय विश्व की सर्व आत्मायें सुख और शान्ति की अंचलि की प्यासी हैं अत: मनसा सेवा द्वारा सुख की, शान्ति की, प्रेम की और खुशी की किरणें पहुँचाकर उन्हें भी दाता, विधाता, वरदाता भगवान शिव के अविनाशी वर्से का अधिकारी बना दें। ईश्वरीय श्रीमत प्रमाण व्यर्थ संकल्पों को फुलस्टाप लगाकर, सभ्यता और सच्चाई की नीति पर चलते हुए बापदादा का नाम बाला करें।

नये वर्ष में उमंग-उत्साह भरे इन संकल्पों को साकार करने की आप सबको पुन: पुन: बधाई हो! बधाई हो! बधाई हो!

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

आपकी दैवी बहन,

बी.के.जानकी

ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नव वर्ष की कोटि-कोटि शुभ बधाइयाँ

अमृत-सूची

- संजय की कलम से 4
- पिताश्री द्वारा..*(सम्पादकीय)* ..7
- पुरुषोत्तम संगमयुग.....10
- ब्रह्मा बाबा - मेरे अभिभावक. 13
- स्वयं बाबा ने मुझे अमृतवेले पढ़ाया.....17
- भाग्यविधाता ने बनाया.....20
- बाबा ने सब संकल्प साकार...23
- नववर्ष की बधाई.. *(कविता)*. 26
- प्यारे बाबा ने दिये 27
- ब्रह्मा बाबा के साथ के कुछ बहुमूल्य अनुभव..... 28
- प्यारे बाबा.. *(कविता)*..... 30
- हृदय परिवर्तन..... 31
- ब्रह्मा बाबा के साथ के..... 33

नये सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414154383

संजय की कलम से..

बाबा के प्यार में देह से न्यारे हो जाते थे

जब कभी (साकार बाबा के साथ बिताए हुए) वो दिन याद आते हैं, रह-रहकर याद आते हैं तो फिर वो दृश्य, वो बातें सामने आती हैं। वो सारी फिल्म मन के सामने घूम जाती है। वो ऐसे संस्मरण हैं जो अनमोल हैं। उसके मुकाबले में और कुछ नहीं। जब हम वो सोचते हैं तो ऐसा लगता है कि अब हम कहाँ हैं? आपने देखा होगा कि बुजुर्ग लोगों के साथी शरीर छोड़-छोड़कर चले जाते हैं और वे बुजुर्ग युवाओं के बीच रहने लगते हैं। उनको यह तो अनुभव होता है कि ये जवान हैं, उत्साहशील हैं, उनको देखकर खुशी तो होती है लेकिन साथ-साथ ऐसा भी महसूस होता है कि हमारे ज़माने के लोग तो चले गये। वो अब नहीं रहे। ऐसे फ़रक तो पड़ता है।

उन दिनों यज्ञ में हम पाँच भाई थे। विश्वकिशोर दादा, विश्वरत्न दादा आनन्द किशोर दादा, चन्द्रहास दादा और एक मैं था। बाकी जो आज रौनक है, इतने सारे भाई हैं, ये कोई भी नहीं थे। सन् 1972 से पहले और कोई नहीं थे। बहत्तर और बहत्तर के बाद ही, अभी के जो बड़े भाई हैं, वो आये मधुबन में। थोड़े-से बहन-भाई वहाँ पर थे, जो मेरे से पहले थे। उन दिनों में पुराने लगभग वही बहनें-भाई थे जो ओम मंडली में आये थे, परिवार के परिवार समर्पित हुए थे।

अजीब रिश्ते-नाते यज्ञ में

एक सौभाग्य मुझे मिला, उन सबसे मिलने का। बाबा की जो लौकिक पत्नी थी उनके साथ बैठके हमने बाबा की सारी बातें सुनीं। बाबा की जो लौकिक बहू बृजेन्द्रा दादी थीं उनसे भी सुनीं। बाबा की लौकिक बच्ची निर्मलशान्ता दादी अभी भी हैं, ये सब उन दिनों यज्ञ में रहती थीं। बाबा की एक लौकिक बहन थी वो भी वहाँ रहती थी, मम्मा की लौकिक माँ भी थी। सब से मैं मिला। मम्मा की लौकिक माँ भोग लगाती थी। मुझे यही आश्चर्य हुआ, जब पहली बार मैं वहाँ गया कि मम्मा की माँ भी मम्मा को माँ कहती थी। माँ अपनी बेटी को माँ कहती थी। मुझे अजीब-सा लगा, आश्चर्य लगा कि यह क्या बात है! यहाँ तो सब आत्मिक नाते से, ज्ञान के नाते से रहते हैं और व्यवहार करते हैं। शरीर का नाता तो नहीं है। एक अजीब बात देखने में आई कि बाबा की जो धर्मपत्नी है, वो भी बाबा को

बाबा कहती है। अज्ञान काल में जिसको पति के रूप में देखा करती थी, उसको बाबा कहती है। सिर्फ कहने में नहीं, उनके व्यवहार में, उनके चलन में यही अनुभव होता था कि बाबा को बाबा समझकर चलती है। यह सब देखने का था। धीरे-धीरे वो सब चले गये। नये-नये लोग आते रहे और काफिला बढ़ता गया, बढ़ता गया और कितना बड़ा काफिला अब हो गया! अब शान्तिवन में जायें, ज्ञान सरोवर में जायें, पाण्डव भवन में जायें, विश्वभर के सेवाकेन्द्रों पर जायें, कितना काफिला बढ़ गया है! बाबा के बच्चे कितने हो गये हैं! वो सब तो हो गये हैं लेकिन जो बाबा, मम्मा, दादियों और बड़े भाइयों के साथ दिन गुज़ारे वो तो फिर नहीं आयेंगे। हमें तो उनकी याद आती है।

पत्र पढ़कर मेरे पाँव के नीचे से जमीन खिसक गई

मुझे ज्ञान में आते हुए थोड़े ही दिन हुए थे। दो-डेढ़ महीने ही हुए होंगे। बाबा का पत्र आया। लाल अक्षरों में सिंधी में लिखा हुआ। सिंधी मैं पढ़ लेता था क्योंकि उर्दू जानता था। उर्दू और सिंधी की लिपि एक ही होती है, थोड़ी मेहनत की जाये तो सिंधी भाषा को समझ सकते हैं। पत्र में बाबा ने लिखा हुआ था, 'बच्चे, क्या इस बूढ़े बाप को मदद नहीं दोगे? इस नई सृष्टि की स्थापना में इस बूढ़े बाप को मदद नहीं दोगे?' पढ़कर ज़मीन मेरे पाँव के नीचे से खिसक गई। मुझे ऐसा लगा कि यह कौन कह रहा है! सृष्टि का आदिपिता जिसमें स्वयं सर्वशक्तिमान शिवबाबा आता है और दोनों करन-करावनहार हैं, हम मनुष्य क्या हैं उनके आगे? मैं आपको सही कहता हूँ कि अभी तो योग लगाना सीख रहा था। बाबा की वो चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते ही योग में था। लाइट में था, मैं खड़ा हूँ या बैठा हूँ, मेरे हाथ में चिट्ठी है या नहीं – यह पता ही नहीं था। मैं तो ऐसा महसूस कर रहा था कि मैं प्रकाश में हूँ। यह कौन कह रहा है! क्या कह रहा है! यह कितना नम्रचित्त है! सृष्टि-स्थापना के लिए कैसे किसको निमित्त बनाता है! उस समय इतना अधिक सोचा ही नहीं होगा, शायद आज इतना सोच रहा हूँ या बाद में सोचा होगा लेकिन उसको पढ़ते-पढ़ते ऐसा लगा कि मैं लाइट स्वरूप हूँ और लाइट में हूँ। पहले इस तरह की योग की कॉमेन्ट्री नहीं होती थी। योग के लिए ऐसा नहीं था कि कुछ विधिपूर्वक एक हफ्ता, दस दिन, बारह दिन आपको अधिक स्पष्ट किया जाये। प्यार बाबा का ऐसा था, बाबा का परिचय ऐसा था, उससे स्वयं देह से न्यारे हो जाते और महसूस करते थे कि हम तो योग में ही हैं। आनन्द में, शान्ति में डूबे हैं। यह संसार हमसे ओझल हो गया है। हम किसी नई दुनिया में हैं जो प्रकाश की दुनिया है।

नारायण से बड़ा कौन?

एक बार बाबा आये क्लास कराने तो प्रश्न किया बच्चों से कि हमारा क्या लक्ष्य है? बाबा हमें कितना ऊँचा पद देता है? इससे और ऊंचा पद कोई होता है क्या? क्लास में एक भाई बैठा था। वह बाबा का दूर के संबंध का पोता लगता था। वो थोड़ा मज़ाकिया आदमी था। बाबा को लौकिक दादा समझकर प्यार करता था। उसने हाथ उठाया। बाबा ने पूछा, हाँ बच्चे, कुछ कहना है? उसने कहा, लक्ष्मी-नारायण से बड़े और भी होते हैं। बाबा ने कहा, अच्छा वो कौन हैं? उसने कहा, देखिये, जो नारायण है, वो बाल कटाता है तो सिर झुकाता होगा नाई के आगे। तो बड़ा नाई हुआ जिसके आगे नारायण भी सिर झुकाता है। कहता है, मैं हज्जाम बनूँगा। हज्जाम तो नारायण से भी बड़ा है क्योंकि नारायण को भी उसके सामने माथा टेकना पड़ता है। सब खूब हँस पड़े। बाबा भी हँसे। ऐसे समय प्रति समय बाबा हँसा भी देते थे और प्यार भी करते थे। बाबा हम बच्चों को हँसते-हँसाते ज्ञान देते थे। वो दिन कितने प्यारे थे और न्यारे थे!

किस डॉक्टर की बात सुनूँ

एक बार बाबा को शुगर की मात्रा बहुत बढ़ गई थी और ब्लड प्रैशर भी था। डॉक्टर ने कहा कि बाबा बहुत जल्दी उठते हैं, दिन में रेस्ट (विश्राम) भी करते नहीं, आप इनको रेस्ट दिया करो, इनको रेस्ट लेने के लिए कहो। मुझे याद है, उस समय मैं मधुबन में ही था। दीदी मनमोहिनी जी और दो-चार भाई-बहनों ने मिलकर बाबा से कहा कि 'बाबा आप अमृतवेले योग में नहीं आइये। आप तो रात को देरी से सोते हैं और विश्व सेवा के बारे में सोचते रहते हैं। जब भी हम आपके कमरे में आते हैं, आप जागते रहते हैं। आप दिन-रात योग तो लगाते ही हैं। इसलिए थोड़े दिनों के लिए कृपया सुबह अमृतवेले

योग में मत आइये।' बाबा ने कहा, 'बच्ची, तुम क्या कहती हो? अमृतवेले न उठूँ? यह कैसे हो सकता है? उस आलमाइटी बाबा ने हमारे लिए समय दे रखा है, उसको कैसे छोडूँ?' उन्होंने बाबा से फिर बहुत विनती की कि बाबा डॉक्टर कहते हैं, आपको विश्राम लेना बहुत जरूरी है। बाबा ने कहा, 'बच्ची, मैं किस डॉक्टर की बात सुनूँ? यह डॉक्टर कहता है, अमृतवेले रेस्ट करो, वो सुप्रीम डॉक्टर कहता है, अमृतवेले उठकर मुझे याद करो। मैं किसकी बात मानूँ? मुझे सुप्रीम डॉक्टर की बात ही माननी पड़ेगी ना! इसलिए मैं अमृतवेले रेस्ट नहीं कर सकता', ऐसे कहकर बाबा ने उनकी बात को इंकार कर दिया। दीदी जी ने नहीं माना। उन्होंने कहा कि बाबा डॉक्टर ने बहुत कहा है इसलिए आप कम से कम दो-तीन दिन मत आओ। हमारी यह बात आपको माननी ही पड़ेगी। बहुत ज़िद करने के बाद बाबा ने कहा, 'अच्छा बच्ची, सोचूँगा।' जब रोज़ के मुआफिक हम अमृतवेले जाकर योग में बैठे तो बाबा भी चुपके से आकर योग में बैठ गये। देखिये, बाबा ने अपनी ज़िन्दगी में एक दिन भी अमृतवेले का योग मिस नहीं किया। कैसी भी बीमारी हो, कितनी भी उम्र हो, उन्होंने ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन नहीं किया।

अगर अपनी कहानी सुनाऊँ, हैदराबाद भी मैं गया था

उन दिनों कितने सेवाकेन्द्र थे! मुश्किल से 10-15 होंगे। जब मैं ज्ञान में आया था, कोई भी सेन्टर नहीं था सिवाय दिल्ली, कमला नगर के। पहला जो सेन्टर खुला विश्व भर में वो कमला नगर सेन्टर था, जहाँ हम रहते थे। दादी जानकी वहीं रहती थी, मनोहर दादी भी रहती थीं, जितनी सारी पुरानी बहनें, दादियाँ हैं, दीदी मनमोहिनी जी भी वहीं रहती थी। इकट्ठे हम रहते थे। छोटी-सी जगह थी लेकिन हम इकट्ठे रहते थे, इकट्ठे खाते-पीते थे, इकट्ठे सेवा करते थे। वो कितने अच्छे दिन थे! तब से इन दादियों के साथ हमारा संबंध है। सन् 1951 में ये सब सेवा में आ गये, सन् 1952 में हम भी आ गये। सेवा तो लगभग इकट्ठी शुरू की। उससे पहले ये कराची या हैदराबाद में रहे। अगर मेरी सारी कहानी सुनाऊँ, वहाँ भी मैं गया। मैं पढ़ता था कॉलेज में और बहुत मन में आता था, 'हे भगवान! आपसे मिलन कब होगा? मेरे जीवन की यही इच्छा है। मैं तो भटक रहा हूँ दुनिया में। जैसे किसी को कोई कमरे में बंद कर दिया जाये, मैं अपने को समझता हूँ कि इस संसार में किसी ने मुझे जेल में बन्द कर दिया है। मुझे निकालता क्यों नहीं? मिलता क्यों नहीं?' रोता था कई दफा। एक दफा जब बहुत तीव्रता में चला गया तो अंदर संकल्प आया कि हैदराबाद सिन्ध की तरफ जाओ, कराची की तरफ जाओ। मैं हैदराबाद सिन्ध की तरफ चल पड़ा। वहाँ पर सफेद कपड़ों वाली बहनों को देखा। वहाँ वैसे भी बहुत सारी सिन्धी बहनें पजामा और कुर्ता जैसा कुछ सफेद पहनती थीं। उनको मैंने देखा। कुछ झलक जैसी लगी। लेकिन कुछ समझ में नहीं आया। कुछ स्पष्ट बताया तो नहीं था। ये तो जैसे टचिंग हुई थी, उस टचिंग की वजह से मैं वहाँ गया था। तीन-चार दिन तक बिना बताये घर से मैं भाग गया इस ख्याल से कि मैं भगवान से मिलने जा रहा हूँ। घर वाले मुझे ढूँढ़ते रहे। वहाँ मुझे कुछ नहीं मिला। देखकर वापस आ गया। वापस आने के बाद राजनीति शास्त्र की कुछ किताबें पढ़ीं तो उनमें जानकारी मिली कि सिन्ध में ओम मण्डली थी, सरकार ने यह किया, वह किया। मैंने फिर लोगों से पूछना शुरू किया कि ओम मण्डली क्या थी? सरकार ने ऐसा क्यों किया इत्यादि-इत्यादि। लोगों को पूरा पता नहीं था। खैर, जो कुछ भी है, बहुत लंबी दास्तान है। उसके बाद तो मैं ज्ञान में आ गया।

❖

सम्पादकीय ..✍

पिताश्री द्वारा महिला सशक्तिकरण का अनूठा कार्य

प्रकृति का शाश्वत नियम है रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आने का। ठीक उसी तरह जब-जब मानव अपने धर्म-कर्म-मर्यादाओं से गिर जाता है तब-तब कोई न कोई प्रकाश की किरण ऊपर से नीचे उतरती है जो दिखा जाती है जीवन का यथार्थ मार्ग। कोई न कोई पैगम्बर, महापुरुष, अवतार या मसीहा अवलंबन दे जाता है समाज को। बदल जाती है समय चक्र की धारा। आज हम उसी जगह पुन: खड़े हैं। अनगिनत हृदयों में यह स्वर झंकृत हो रहे हैं कि 'भगवान आओ, इस व्यथित भू के भार को उतारो, कहाँ हो? यह नाश का खेल कब तक चलता रहेगा।' नि:संदेह परिवर्तन की इस महावेला में सृष्टि रचयिता निराकार परमपिता परमात्मा शिव स्वयं अवतरित हो एक साधारण तन का आधार लेकर बदल रहे हैं सृष्टि की काया। अति की इति समीप है। धर्मग्लानि का समय और परमात्मा के अवतरण का काल यही है। परमात्मा कौन है? क्या उसका भी जन्म अथवा अवतरण होता है? कौन है वह युगपुरुष जो परमात्मा का साकार माध्यम बनता है? कैसे युग परिवर्तन होता है? यह किसी नाटक का संवाद, पटकथा, पहेली अथवा सम्भाषण नहीं। स्वयं परमात्मा यह रहस्य सुलझा रहे हैं।

भगवान के यादगार महावाक्यों में उल्लेख है, 'मैं साधारण तन में अवतरित होता हूँ।' दादा लेखराज का तन ही वह साधारण तन है जिसमें भगवान का अवतरण हुआ। दादा लेखराज कलकत्ता में हीरे-जवाहरात का व्यापार करते थे। आपके अंदर बचपन से ही भक्ति के संस्कार थे। आपने लौकिक में 12 गुरु किये थे। साठ वर्ष की आयु में आपको निराकार परमपिता परमात्मा ने इस कलियुगी दुनिया के महाविनाश और आने वाली नई सतयुगी दुनिया के दिव्य साक्षात्कार कराये और आपके तन में प्रविष्ट होकर नये युग की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया। आपको अलौकिक नाम मिला 'प्रजापिता ब्रह्मा'। गायन है कि प्रजापिता ब्रह्मा ही आदिदेव हैं, बड़ी माँ हैं, प्रथम ब्राह्मण और प्रथम पुरुष हैं। नई सृष्टि की पहली कलम हैं, भगवान के प्रथम पुत्र और सृष्टि के अग्रज, पूर्वज और प्रपितामह हैं। भगवान के बाद सृष्टि रंगमंच के सबसे महत्त्वपूर्ण रंगकर्मी हैं लेकिन फिर भी बिल्कुल गुप्त हैं। आपने ही प्रजापिता ब्रह्मा का कर्त्तव्यवाचक नाम पाकर अपने मस्तक में ज्ञान सागर को समाया और उस ज्ञान सागर ने पतित आत्माओं को पावन बनाने के लिए आपके मुख से ज्ञान-गंगा बहाई।

आपने परमात्मा के आदेश अनुसार अपने व्यापार को समेट लिया और सिन्ध हैदराबाद में अपने ही घर में ओम मण्डली नाम से एक ट्रस्ट बनाकर अपनी संपत्ति कन्याओं माताओं के सामने समर्पित कर दी, इस प्रकार, एक छोटे सत्संग के रूप में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शुरूआत हुई। कराची में समुद्र के किनारे चौदह वर्ष तपस्या करने के पश्चात् सन् 1950 में इस विद्यालय में समर्पित सभी भाई-बहनें स्थानांतरित होकर राजस्थान के अरावली पर्वत – माउंट आबू में आये, यहीं विद्यालय का मुख्यालय स्थापित हुआ। सन् 1952 से भारत में ईश्वरीय सेवायें प्रारंभ हुई। पिताश्री ने अपनी गहन तपस्या एवं उपराम स्थिति द्वारा समाज के हर वर्ग को ऊँचा उठाने की अनुपम सेवा की। अनपढ़ हों या पढ़े-लिखे, गरीब हों या

अमीर, नर हों या नारी – सभी की सुषुप्त आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत कर पिताश्री ने उनमें देवत्व भर दिया। लेख के कलेवर को ध्यान में रखते हुए हम उनकी महिलाओं के कल्याण की अद्भुत कार्यविधि का वर्णन कर रहे हैं –

कन्याएँ हैं कन्हैया लाल की

यदि कन्याएँ ईश्वरीय ज्ञान सुनने आतीं तो बाबा कहते, 'वे तो हैं ही कन्हैया लाल की कन्याएँ। कन्याओं का तो भारत में नवरात्रों में भी पूजन होता है क्योंकि उन्होंने पहले भी भारत को पतित से पावन और पुजारी से पूज्य बनाने का कार्य किया है। भारत की कन्या तो वैसे भी सबसे गरीब है क्योंकि उसका पिता की संपत्ति पर जरा भी अधिकार नहीं है।'

शेर-वाहिनी शक्ति

कन्या तो पहले ही से संन्यास-बुद्धि होती है क्योंकि उसके मन में यह भाव तो सदा बना ही रहता है कि आखिर मुझे इस घर से तो एक दिन जाना ही है और उसमें नम्रता, सहनशीलता तथा संकोच इत्यादि गुण भी होते ही हैं। अत: बाबा कहते – 'सुशील कन्या तो सौ ब्राह्मणों से भी उत्तम है। यह तो है ही भगवान की अमानत। क्यों बच्ची! अब तो विष कभी नहीं पियेंगी और शेर-वाहिनी शक्ति बनेंगी? क्यों बच्ची, ऐसा है न?' तो कन्याएँ कह उठतीं – 'हाँ बाबा, हम तो पवित्रता का व्रत ले, भारत की सच्ची सेवा करेंगी। हम ज्ञान-गंगायें बनकर भारत को पावन करने के निमित्त बनेंगी।' इस प्रकार, पिताश्री कन्याओं के कल्याण के निमित्त बने।

कन्या – पवित्रता और शक्ति का पर्याय

यह कैसे आश्चर्य की बात है कि जहाँ आमतौर पर भारत में, घर में, कन्या का जन्म होने पर माता-पिता उदास-से हो जाते हैं, वहाँ बाबा कन्याओं का ज्ञान में प्रवेश देखकर उन्हें विश्व के लिए शुभ लक्षण मानते। एक कन्या के आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेने पर वे इतने खुश होते कि जैसे इन द्वारा अब भारत के सौ व्यक्तियों के मनोस्थल से तो आसुरियता नष्ट होनी ही है। अत: शायद पिताश्री ही संसार में साकार रूप में एक ऐसे पिता अथवा पितामह थे जो अधिक से अधिक ज्ञान-पुत्रियाँ होने से खुश होते थे। उनके लिए 'कन्या' शब्द ही पवित्रता एवं शक्ति का पर्याय था। ज्ञान-युक्त एवं सुशील कन्याओं के प्रति उनका इतना स्नेह और सम्मान होता था कि वे दिव्यतायुक्त पुरुषों के लिए भी कई बार सहसा 'हे बच्ची' ऐसा कहकर संबोधन करते थे।

माताओं का सेवक

बाबा कन्याओं-माताओं का सदा सम्मान करना सिखाते थे तथा ज्ञान सुनने वाली माताओं को बाबा कहते – 'इनका मर्तबा (स्थान) उच्च बनाने के लिए ही तो शिवबाबा आये हैं क्योंकि बहुतकाल से इन पर बहुत सितम होते रहे हैं और समाज में इनका अपमान तथा तिरस्कार भी होता आया है परंतु अब इनके कारण मुझे भी बीच में शिवबाबा से यह ज्ञान सुनने का अवसर मिल जाता है।' देखिये तो बाबा कितनी नम्रतापूर्वक स्वयं को गुप्त करके माताओं-बहनों को प्रत्यक्ष करने की कोशिश करते। कभी वे कहते कि माताओं-कन्याएँ तो मुझसे भी अधिक प्रवीण हैं क्योंकि वे भिन्न-भिन्न संस्कारों और योग्यताओं वाले मनुष्यों को ज्ञान देती हैं और भाषण करती हैं। यही वास्तव में पतित-पावनी गंगायें हैं। वे कहते – 'इन कन्याओं-माताओं को ज्ञान-कलश देने ही तो शिवबाबा आये हैं। इन माताओं को 'वन्दे मातरम्' कहना चाहिए।' इस प्रकार, वे माताओं का मान करके उन्हें सहारा देने के निमित्त बने और उनका स्थान ऊँचा करने के लिए उन्होंने स्वयं को अप्रत्यक्ष किया। वे सदा कहते – 'मैं तो इनका सेवक हूँ।' माताओं को सहारा देने के कारण उन्हें लोगों की इतनी आलोचनायें सुननी पड़ीं, इतने कष्ट भी सहन करने पड़े परंतु इसके लिए उन्होंने सब-कुछ किया।

कन्याओं-माताओं को सर्वस्व समर्पित

यदि गहराई से विचार किया जाये तो महिलाओं को समाज में उचित मान दिये जाने, उन्हें उचित अधिकार मिलने और उनकी जागृति के लिए संगठन बनाने की ओर बाबा ने जो कदम लिये, वे अपनी प्रकार के अनूठे थे, वैसे कदम उससे पहले किसी ने नहीं उठाये थे। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि बाबा ही सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सर्वस्व कन्याओं-माताओं का एक ट्रस्ट (न्यास) बनाकर उसको समर्पित कर दिया। पिताश्री को कन्याओं-माताओं का अपमान असह्य था। जब वे जवाहरात का व्यापार करते थे तब यद्यपि वे श्रीनारायण के अनन्य भक्त थे तथापि वे चित्रों में दासी की तरह श्रीलक्ष्मी को विष्णु के पाँव दबाते हुए नहीं देख सकते थे। अत: वे चित्रकार को विशेषतया बुलाकर चित्र का यह भाग बदलवा देते थे। वे प्राय: विनोद-भरे स्वर में कहा भी करते थे कि 'मैं चित्रकार से कहकर श्रीलक्ष्मी को इस सेवा से मुक्त करा देता था।'

अब नारियों द्वारा ही 'ओम्' की अग्रध्वनि

पिताश्री के मुखारविन्द द्वारा जब शिवबाबा की ज्ञान-सरिता स्रवित हुई तब नारी का तिरस्कार करने रूप जो कल्मष समाज पर था, वह धुलने लगा। जो कन्यायें-मातायें पिताश्री के सत्संग में आतीं, वे 'ओम्' की ध्वनि किया करतीं और ज्ञान के गीतों द्वारा दूसरों को भी पवित्र जीवन का संदेश देतीं। इस प्रकार, संन्यासी लोग ग्रंथों की दुहाई देकर जो यह कहते चले आते थे कि नारी को ओम् कहने का भी अधिकार नहीं है, बाबा ने उनके इस कथन को प्रैक्टिकल रीति मिथ्या सिद्ध कर दिया। स्वयं बाबा अपने प्रवचनों में कन्याओं-माताओं को कहा करते कि अब आप रिढ (बकरी) बनना छोड़ो और शेरनी बनो। बाबा ने उन्हें समझाया कि स्त्री रूप तो प्रकृति (अर्थात् देह) का है, आप तो पुरुष (आत्मा) हो; क्षेत्र नहीं हो, क्षेत्रज्ञ हो। अत: भय को छोड़ो और देही-अभिमानी तथा अभय बनो। बाबा ने उनके लिए सिलाई और पढ़ने-लिखने की भी व्यवस्था की। बाबा ने एक-दो बहुत बड़े भवन भी इस कार्य में लगा दिए थे ताकि उनका बौद्धिक विकास हो और साथ-साथ वे आत्मनिर्भर हो सकें। उनके लिए स्वयं बाबा ने बहुत-से गीत भी बनाये जोकि वहाँ सभा में गाये जाते थे। उनमें से एक गीत ऐसा भी था जिसमें यह बताया गया था कि जो कानों में इतनी सारी बालियाँ, हाथों में इतनी सारी चूड़ियाँ रूपी कड़ियाँ और नाक में गुलामी की नथ पहने हुए हैं, वे पिंजरे की मैना हैं। आज़ाद वे हैं जो फैशन, बनावट व सजावट इत्यादि से मुक्त हो सादगी, त्याग, तपस्या और आत्मनिर्भरता का जीवन अपनाते हैं।

माता गुरु द्वारा होगा उद्धार

बाबा उन्हें प्रेरणायें देते कि जगत की माताओं और कन्याओं, अब जागो और ज्ञान की ललकार करो। तुम्हारे द्वारा ही जगत का कल्याण होना है। जब माता गुरु बनेगी, तब ही भारत की संतानों का उद्धार होगा। तुम्हारे कारण ही भारत का उत्थान रुका है। तुम केशों का शृंगार करने में लगी हो और उधर भारत माँ के लाल ज्ञान के बिना विकारों में ग्रस्त हैं, आसुरियता से संत्रस्त हैं और दुख तथा अशान्ति से कराह रहे हैं। कितनी ही कन्याओं-माताओं ने उनकी इस चुनौतीपूर्ण, प्रेरणादायक ध्वनि से जागृत होकर राजऋषि अथवा राजयोगिनी के आसन को ग्रहण किया और अपने केश खोलकर मन में अपने-आप से यह प्रतिज्ञा की कि अब हम अपने आपको पाँच विकारों से मुक्त करके ही दम लेंगी और भारत-भूमि पर निर्विकारी स्वराज्य स्थापित करके ही रहेंगी। बाबा की उन्हीं शिक्षाओं व प्रेरणाओं का ही मधुर फल है कि आज ब्रह्माकुमारी बहनों-माताओं का इतना बड़ा शक्तिदल भारत को पवित्र बनाने में लगा है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं यज्ञ का कारोबार

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

ज्ञान सागर शिवबाबा के द्वारा प्रस्थापित यह संस्था एक विश्व विद्यालय भी है तो सारे कल्प में विश्व राज्य कारोबार कैसे होगा, उसकी शिक्षा द्वारा विश्व महाराजा-महारानी की नियुक्ति का आधार भी है। इस विश्व विद्यालय के द्वारा प्राप्त शिक्षा और अपने पुरुषार्थ के आधार पर आत्मा, भविष्य नई दुनिया में श्रेष्ठ पद की अधिकारी बनती है।

शिवबाबा ने कई बार कहा है कि बाबा के सभी सेवाकेन्द्र बाबा के दुकान हैं और हर सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन मैनेजर है और बाबा ऊपर से देखता रहता है कि सभी मैनेजर कैसे कारोबार को चलाकर सेवा को आगे बढ़ा रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि हमारे कई भाई-बहनों के अथक पुरुषार्थ के आधार पर अनेक सेवाकेन्द्रों और उपसेवाकेन्द्रों ने सेवा का विस्तार किया और फलस्वरूप उनको ज़ोन या सब-ज़ोन की उपाधि देनी पड़ी।

उदाहरणार्थ, हमने आदरणीया जानकी दादी को पूने में 30x30 फुट के कमरे, 3x3 फुट के रसोईघर और 3x3 फुट के स्नानघर, ऐसे मकान में सेवा करते हुए देखा। वही जानकी दादी सच्चे दिल और अथक पुरुषार्थ से सेवा करके इस विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका के पद पर सेवारत हैं। कहने का भावार्थ है कि जो आत्मा यज्ञ कारोबार को दिल से, यथार्थ रीति से अच्छे से अच्छा संचालन करती है तो शिवबाबा उस आत्मा को आगे बढ़ने का पूरा अवसर और सहयोग देते हैं।

इस यज्ञ के कारोबार में भावना और वास्तविकता का सन्तुलन होना अति आवश्यक है। मुझे याद है, एक बार जब ब्रह्मा बाबा मुम्बई में बीकन्स भवन में थे, तब एक बात निकली कि कई भाई-बहनें शिवबाबा को भोग लगाने से पहले, अपने लौकिक कारोबार के कारण उठकर चले जाते हैं। मैंने ब्रह्मा बाबा से पूछा, बाबा, ऐसे में क्या करना चाहिए? तब ब्रह्मा बाबा ने हमसे ही पूछ लिया कि ऐसे में क्या करना चाहिए? मैंने कहा, जब तक शिवबाबा को भोग नहीं लगा है तो आत्माओं को कैसे भोग दे सकते हैं। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा, आप अपनी भावना की दृष्टि से सही हैं परन्तु आप मेरी दृष्टि से भी सोचो और कारोबार करो। मैं पिता हूँ और आप सब मेरे बच्चे हो। क्या दुनिया में कोई ऐसे माँ-बाप होंगे, जो कहें, पहले हम खाएँ, फिर बच्चे खायें। होता तो यह है कि माँ-बाप पेट पर पट्टी बाँध कर भी बच्चों को पहले खिलाते हैं। तो आप मेरे बच्चों को बिना भोग लिए कैसे जाने दोगे। तब बाबा ने कहा कि भावना और वास्तविकता को देखकर ही सतयुग में कारोबार चलेगी। आपकी भावना है तो आप शिवबाबा के लिए थोड़ा भोग निकालकर अलग रख दो और बाकी भोग को जाने वाले भाई-बहनों को देते रहो। इससे आप अपनी भावना और मेरे पिता के कर्त्तव्य दोनों के आधार पर यज्ञ का कारोबार सम्पन्न कर सकेंगे। तब से मैंने सीख लिया कि भावना और वास्तविकता दोनों का सन्तुलन रखकर यज्ञ का कारोबार करना चाहिए, जिससे कारोबार भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ होगा और सबको बाबा के लिए प्यार भी रहेगा।

अव्यक्त बाबा से एक बार मैंने पूछा, बाबा, यज्ञ के अनेक सेवाकेन्द्रों पर मकान बन रहे हैं और सब अपने भवनों का नाम राजयोग भवन रखना चाहते हैं, तो क्या सबको यह नाम रखने की छुट्टी दें? तब बाबा ने मुझसे ही प्रश्न पूछा कि

क्या होना चाहिए? मैंने कहा, सभी की भावना के आधार पर उनके भवनों का नाम राजयोग भवन होने में कोई भी असुविधा नहीं होगी क्योंकि सभी अलग-अलग स्थान हैं। अगर कलकत्ता, बॉम्बे, बैंगलौर में राजयोग भवन होता है तो पहचानने में कोई असुविधा नहीं होगी और एक ही राजयोग भवन नाम होने से यज्ञ की समान नाम से प्रसिद्धि भी होगी। तब बाबा ने कहा, आप भावना के आधार पर भवनों के नाम रखते समय मेरा भी ख्याल नहीं रखते। अगर एक बाप के चार लड़के होंगे और चारों का एक ही नाम होगा तो चारों को कैसे बुलायेंगे, चारों के साथ व्यवहार कैसे होगा? तो ये सब मकान मेरे हैं तो सबके नाम एक कैसे हो सकते हैं। आपके लिए सभी स्थान अलग-अलग हैं परन्तु मैं तो एक सेकेण्ड में सब स्थानों पर जा सकता हूँ। आप बाप की दृष्टि से विचार करो, फिर कारोबार करो। बाप यही चाहता है कि बच्चे ऐसा कारोबार करें ताकि भविष्य नये विश्व में अचल, अटल, अखण्ड, निर्विघ्न सारा कारोबार चले, सभी सन्तुष्ट रहें।

सतयुग में सारा कारोबार हमें स्वयं ही करना होगा, इसलिए अभी ही सब बातों का अनुभवी होकर कारोबार करना है। यज्ञ का कोई भी कारोबार करते, अपने दृष्टिकोण में रखना है कि ऐसी परिस्थिति में ब्रह्मा बाबा ने कैसे कार्य सम्पन्न किया होगा। इस दृष्टिकोण से सोचेंगे तो सब कारोबार सुचारु रूप से सम्पन्न होगा। दिव्य बुद्धि का दाता परमपिता परमात्मा है, उनके साथ बुद्धियोग रखने से दिव्य शक्ति का आविर्भाव हमारे में होगा और सब कार्य श्रेष्ठ से श्रेष्ठ होंगे। मैंने कारोबार में बाबा की इस शिक्षा का प्रयोग किया है और मैं जब-जब भी यज्ञ के मकान खरीद करने या देखने के लिए जाता हूँ तो सदा ही बाबा को अपने साथ इमर्ज करके बाबा से रूहरिहान करके, उनकी श्रीमत को ध्यान में रखकर मकानों के विषय में निर्णय करता हूँ, इसलिए ही यज्ञ के सभी मकानों का कारोबार श्रेष्ठ चल रहा है अर्थात् यज्ञ के कारोबार में अपनी पसन्द नहीं परन्तु बापदादा की पसन्द क्या होगी, ऐसी सोच रखने से हमारी सोच दिव्य बन जायेगी।

साकार और अव्यक्त बापदादा दोनों ने कहा है कि आगे चलकर इस यज्ञ का कारोबार एक शीशमहल जैसा बन जायेगा अर्थात् यज्ञ की हर प्रवृत्ति दुनिया के सामने प्रत्यक्ष होगी। इसलिए यज्ञ के कारोबार को पारदर्शक (Transparent) बनाना अति आवश्यक है। हमारे भाई-बहनों की समझ में ट्रान्सपेरेण्ट का अर्थ अलग-अलग है परन्तु मैं मानता हूँ कि मेरे द्वारा होने वाला कार्य इतना शुद्ध और पारदर्शी हो जो किसी को भी उसमें संशय या आपत्ति न हो। इसके लिए जितना हम अपनी आत्मा को पवित्र बनायेंगे, हमारा बुद्धियोग बाबा के साथ होगा, उतना ही हमारा कार्य शुद्ध और पारदर्शक बनेगा, जो सबको सुख देने वाला होगा और हम भी निश्चिन्त रहेंगे।

हमारा कारोबार कितना शुद्ध, निर्मल और पारदर्शक हो, उसके सम्बन्ध में अभी-अभी आदरणीया जानकी दादी जी ने अपना एक अनुभव सुनाया, वह यहाँ लिखना अति आवश्यक समझता हूँ। जानकी दादी जी ने बताया कि जब वे पूना में सेवा पर उपस्थित थीं और ब्रह्मा बाबा बॉम्बे से पूना आने वाले थे, तब उन्होंने एक भाई से बंगला फ्री में लिया पर बंगले का माली कुछ पैसे चाहता था, इसलिए उसने खिट-खिट की। तब जानकी दादी ने उसको 200 रुपये दे दिये। दूसरे दिन दादी जी के पास बाबा का फोन आया कि ब्रह्मा बाबा को अव्यक्त बाबा ने मना किया है इसलिए पूना आने का प्रोग्राम केन्सिल है। दादी

जी ने बाबा से कारण पूछा तो ब्रह्मा बाबा ने कहा - बच्ची, तूने कोई भूल की होगी, जिससे बाबा ने पूना का प्रोग्राम केन्सिल किया। तब दादी जी ने बाबा को बताया कि मैंने मकान माली को 200 रुपये दिये हैं। इस घटना को सुनकर हमारी समझ में आया कि यज्ञ का कारोबार कितना शुद्ध, निर्मल और पारदर्शक होना चाहिए। एक छोटी-सी बात के कारण बाबा का पूना का प्रोग्राम केन्सिल हो गया। दादी जी ने एक स्लोगन भी कहा, जहाँ भ्रष्टाचार है, वहाँ भगवान नहीं। यह बात हम सबको, जो यज्ञ कारोबार के निमित्त हैं, ध्यान में रखनी चाहिए।

कोई निर्णय करने के समय अनेक प्रकार की दुविधायें उत्पन्न होती हैं परन्तु बापदादा को सामने रख निर्णय करते हैं तो बापदादा का बल मिल जाता है, जो हमारे लिए श्रीमत बन जाती है। उस अनुसार जब कार्य करते हैं तो हमको भी सन्तोष होता है और दूसरे भी सन्तुष्ट होते हैं। विकट से विकट परिस्थिति में भी बापदादा का मार्गदर्शन हम सबको मिल सकता है और मिलता ही है।

एक बार मैंने अव्यक्त बापदादा को सन्देश भेजा कि बाबा, यज्ञ का कारोबार बहुत बढ़ गया है, उसे निपटाने में दिन के 24 घण्टे भी कम पड़ते हैं। तब बाबा ने स्टेज पर ही माइक हटाकर, हम तीन भाइयों के सामने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया कि अभी तो इतनी कोई कारोबार नहीं है परन्तु अन्त समय यज्ञ का कारोबार इतना बढ़ जायेगा जिसकी आप लोगों को अभी कल्पना भी नहीं है, उसके लिए आप बच्चों को अभी से तैयारी करनी है, उस समय कोई निर्णय करने के लिए सोचने का भी समय नहीं होगा, तुरन्त निर्णय करना होगा। अन्तिम समय अचानक आयेगा। यदि अभी से उसके लिए तैयार नहीं होंगे तो उस समय यज्ञ-कारोबार करने में सफल नहीं होंगे। इसलिए अव्यक्त बापदादा ने एक मुरली में कहा है कि हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर कारोबार करो। दुनिया की अन्तिम घड़ी न सोचो परन्तु अपनी अन्तिम घड़ी तो कभी भी हो सकती है, उसका सदा ध्यान रखो।

एक बार बाबा ने यह भी कहा था, परीक्षायें बच्चों के सामने आती ही रहती हैं परन्तु अन्तिम परीक्षा तो एक सेकेण्ड की होगी। उस एक सेकेण्ड की परीक्षा में जो पास होंगे, वे बिन्दीधारी अर्थात् सतयुगी बनेंगे और जो फेल होंगे, वे चिन्दीधारी अर्थात त्रेतायुगी बनेंगे। मैंने बाबा को कहा, बाबा, यह बिन्दी-चिन्दी का राज़ हमारी समझ में नहीं आया। तब बाबा ने कहा, बिन्दी को तो आप सब जानते हो, मातायें माथे पर बिन्दी लगाती हैं और चिन्दी कल्प-वृक्ष के चित्र में ध्यान से देखो। सीता के माथे पर चिन्दी लगी हुई है। तो इस राज़ को समझकर अन्तिम समय की परीक्षा में पास होने के लिए तैयारी हमको अभी संगमयुग पर ही करनी होगी, जिससे सेकेण्ड की अन्तिम परीक्षा में पास होकर बिन्दीधारी बनें अर्थात् सतयुग में आयें।

बाबा का अभय वरदान सबके साथ है कि एक कदम बच्चों का आगे बढ़े तो हज़ार कदम का सहयोग देने के लिए बापदादा बँधायमान है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपना एक कदम आगे बढ़ाते हुए, शेक्सपीयर के हेमलेट और गीता के अर्जुन के समान 'करें या न करें', की दुविधा से सदा अपने को मुक्त रखें। ❖

जैसे बर्तनों को राख से साफ किया जाता है, कपड़े को साबुन से धोया जाता है और शरीर को पानी से स्वच्छ किया जाता है, वैसे ही बुद्धि को पवित्र बनाने का साधन ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग ही है।

ब्रह्मा बाबा – मेरे अभिभावक के रूप में

• ब्रह्माकुमारी ज्योति, लंदन

ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन, चन्द्रमणि दादी की बहन की बेटी की बेटी हैं। दादी चन्द्रमणि के पिताजी दादा रत्नचन्द, अपने परिवार सहित यज्ञ में समर्पित हो गए थे। ज्योति की माता चन्द्रा बहन बांधेली होते हुए भी बाबा के साथ सदा अटूट लगन में रहने वाली सच्ची गोपी हैं। माँ की तपस्या के फल रूप में ही ज्योति बहन को अनायास आबू में पढ़ने की लॉटरी मिली। सोफिया कान्वेन्ट में पढ़ते हुए इस भाग्यशाली बालिका के गार्जियन बने स्वयं ब्रह्मा बाबा। बालिगों को ज्ञानामृत, स्नेहामृत से भरपूर करने वाले बाबा ने एक छोटी कन्या में किस कदर ईश्वरीय स्नेह का बीजारोपण कर दिया,यह रोचक कहानी बहन ज्योति के ही शब्दों में प्रस्तुत है.. – सम्पादक

जब मैं तीन वर्ष की थी तब हम कंबोडिया में रहते थे। कंबोडिया में अंग्रेज़ी भाषा की पढ़ाई नहीं थी अत: मेरे माता-पिता, अंग्रेज़ी भाषा की पढ़ाई के उद्देश्य से मुझे सात वर्ष की आयु में भारत में मेरे दादा-दादी के पास कोलकाता ले आए। दादा-दादी का परिवार बड़ा था, परिवार में सभी भक्त थे। मैं भी बचपन से ही श्री कृष्ण की भक्तिन बन गई। मैं जन्माष्टमी पर उपवास करती, सारी रात श्री कृष्ण को झुला झुलाती और रास करती थी। पास-पड़ोस के लोगों ने मुझे कृष्ण की भक्त के रूप में देखना शुरू कर दिया।

श्री कृष्ण की आत्मा से मिलने की लगन

जब मैं 14 वर्ष की हुई तो स्कूल की छुट्टियों में वापस कंबोडिया गई और माता-पिता से मेरा मिलन हुआ। माँ ने मेरे से पूछा – तुम्हें श्री कृष्ण से बहुत प्यार है तो क्या तुमको मालूम है, उसकी आत्मा कहाँ है? मैं बहुत ध्यान से सुनने लगी क्योंकि श्री कृष्ण की हर बात मुझे अच्छी लगती थी। मेरी माँ ईश्वरीय ज्ञान में हैं, उन्होंने मुझे सुनाना शुरू किया कि सतयुग में श्री कृष्ण सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म वाले दैवी राजकुमार थे। बचपन में श्री राधा के साथ वे खेल-पाल करते थे। बड़े होने पर जब उनका स्वयंवर हुआ तो वे श्री नारायण कहलाये। सतयुग में उनका अटल-अखण्ड राज्य था। प्रकृति उनकी दासी थी। जब 150 वर्ष की आयु पूरी हुई तो उन्होंने स्वेच्छा से देह का त्याग किया और श्री कृष्ण की आत्मा का पुनर्जन्म हुआ। जब मैंने यह सुना तो मैंने कहा, माँ-माँ, श्री कृष्ण देह त्याग नहीं कर सकते, वे भगवान हैं, यह हो ही नहीं सकता। माँ ने कहा, बेटा, यह तो नियम है, जिसने जन्म लिया है वह शरीर तो अनिवार्य रूप से छोड़ेगा ही। श्री कृष्ण भी पुराना शरीर छोड़ता है और नया लेता है लेकिन पुनर्जन्म के इस क्रम में उसे भी याद नहीं रहता कि मैं अपने पूर्व जन्मों में कौन था? मैं उतावली हो उठी और मैंने कहा, बताइए, अब श्री कृष्ण कहाँ हैं? मुझे उनसे मिलना है। माँ ने कहा, सतयुग के बाद त्रेता और त्रेता के बाद द्वापर युग आया। द्वापर में वही आत्मा पूज्य से पुजारी बनी और अपने ही संपूर्ण स्वरूप की पूजा करने लगी। कलियुग में तो आत्माएँ बिल्कुल ही पतित हो जाती हैं। मैंने फिर बीच में ही कहा – माँ, मुझे बताओ, श्री कृष्ण अब कहाँ हैं, मुझे उनसे मिलना है। माँ ने कलियुग के धर्मग्लानि के चिह्न समझाकर मुझे बताया कि अब श्री कृष्ण की आत्मा अपने अंतिम जन्म में प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में, परमपिता परमात्मा शिव के आदेशानुसार माउंट आबू में नई दुनिया की स्थापना के कार्य में संलग्न है। माँ की ये बातें सुनकर मुझे लगन लग गई कि मैं श्री कृष्ण की आत्मा से ज़रूर मिलूं।

साकार बाबा का प्रथम महावाक्य मेरे प्रति

कोलकाता में रहते-रहते मेरा मन

ऊब चुका था। मैंने माता-पिता को कहा कि अब मैं वापस कोलकाता नहीं जाऊँगी, मैं कहीं भी बोर्डिंग में रहकर ही पढ़ना चाहती हूँ। संयोग देखिए, यह बात चल ही रही थी कि इतने में पिताजी के एक दोस्त आये। पिताजी ने कहा – देखो, यह बच्ची ज़िद कर रही है कि मैं बोर्डिंग में जाऊँगी, क्या करें? दोस्त ने कहा – मेरी दो बेटियाँ माउंट आबू में बोर्डिंग में हैं। स्कूल बहुत अच्छा है, इसको भी वहीं भेजो। यह सुनकर मेरी माँ बहुत खुश हो गई क्योंकि पिताजी ज्ञान में न होने के कारण माता जी को आबू आने की छुट्टी नहीं मिलती थी। उन्होंने सोचा, बेटी, आबू में रहेगी तो मुझे जाने को मिलेगा। मैं भी खुश हो गई कि मुझे श्री कृष्ण की आत्मा से मिलने का सौभाग्य मिलेगा। यह सन् 1964 की बात है। ब्रह्मा बाबा तब साकार में थे। मैं अकेली कंबोडिया से मुंबई आई और मुंबई से दादी हृदयपुष्पा मुझे अपने साथ माउंट आबू ले गई। जब मैं पांडव भवन में पहुँची तो इतना बड़ा घर और इतने सारे लोग देखकर सहम गई। मैं बहुत शर्मीली थी। दादी हृदयपुष्पा बाबा से मिलने की तैयारी में थी और मेरे भी कपड़ों का चुनाव कर रही थी। उन्होंने मेरा सारा बैग छान मारा, उसमें एक भी सफेद फ्राक नहीं थी। फिर रंगीन फ्राक में ही मुझे बाबा से मिलाने ले चली। बाबा अपने कमरे में गद्दी पर विराजमान थे। उन्हें मालूम था कि चंद्रा की बेटी पढ़ाई करने के लिए कंबोडिया से आबू आ रही है। दादी हृदयपुष्पा ने सबका परिचय दिया और मेरे बारे में भी कहा, बाबा, यह चंद्रा की बच्ची आई है। बाबा ने बहुत ही प्यार से मेरी तरफ देखा और कहा, बाबा को पता पड़ा है; और फिर उन्हीं स्नेही नज़रों से देखते हुए मुझे कहा, **बहुत मीठी बच्ची है।** बाबा का यह पहला-पहला महावाक्य मेरे प्रति उच्चारित हुआ। इस एक महावाक्य ने मेरे जीवन को बहुत बचाकर रखा है। यदि मैं कभी मीठा न भी बनना चाहूँ तो भी कानों में यह आवाज़ गूंजती है। मुझे ये शब्द कभी भूल नहीं सकते कि भगवान ने मुझे मीठी बच्ची बोला है। फिर मैं बाबा की गोद में गई। मुझे बहुत ही दिव्य प्रेम का अनुभव हुआ। लौकिक जीवन में कभी भी ऐसे प्रेम की भासना नहीं आई थी। आयु छोटी होने के कारण मैं उस प्रेम का बहुत गहराई से तो वर्णन नहीं कर सकती लेकिन मुझे उस गोद में जो सुख और आनन्द मिला वह मेरे लिए नया और सुन्दर था।

बाबा का दूसरा महावाक्य मेरे प्रति

दूसरे दिन दादा विश्वरत्न के साथ मैं सोफिया कान्वेन्ट में गई और एक सप्ताह बाद बाबा से मिलने वापस मधुबन आई। बाबा अपने ऑफिस में

खत लिख रहे थे। उनके एक तरफ ईशु दादी कुर्सी पर बैठी कुछ लिख रही थी और दूसरी तरफ दीदी मनमोहिनी बैठी थी। बाबा ने मुझे देखा और हाथ में पकड़ा हुआ पैड तुरंत रख दिया, फिर बड़े प्यार से इशारा करके बुलाया – आओ बच्ची, सुनाओ, तुमको स्कूल कैसा लगा? मेरे आँसू टपक पड़े क्योंकि मुझे स्कूल अच्छा नहीं लगा था। किसी ने बाबा को कहा, बाबा, यह तो रो रही है। बाबा ने फिर कहा – आओ बच्ची, सुनाओ, क्या अच्छा नहीं लगा। मैंने कहा – बाबा, वहाँ का खाना अच्छा नहीं है; लड़कियाँ अच्छी नहीं हैं; स्नान नहीं करने देते हैं (पानी की कमी के कारण सप्ताह में केवल दो दिन ही स्नान करने की छुट्टी मिलती थी। बाबा से मिलने आती थी

तो स्नान करने की विशेष छुट्टी लेकर, स्नान करके फिर बाबा से मिलने आती थी।) ईशु दादी ने कहा – बाबा, राम (पिताजी के दोस्त) की बेटियाँ तो बहुत खुश हैं। यह सुनकर बाबा बोले – **यह अन्य लड़कियों जैसी नहीं है।** यह बाबा ने मेरे प्रति दूसरा महावाक्य उच्चारा। यह मेरे लिए बहुत बड़ा वरदान है। इसको याद करते ही मुझे लगता है कि मैं दुनिया में विशेष (unique) हूँ। मैं कुछ खराब करना चाहूँ तो भी कर नहीं सकती। बाबा के इस महावाक्य ने मुझे अच्छा बनने के लिए मजबूर कर दिया। फिर मैं बाबा के पास आकर बैठ गई, मेरे आँसू टपक रहे थे। बाबा ने लच्छू दादी को कहकर हांगकांग से आए हुए खिलौने मंगवाए। डुगडुगी बजाते हुए बंदर वाला एक खिलौना था। बाबा ने अपने हाथों उसमें चाबी भरी, बंदर डुगडुगी बजाने लगा। मुझे वह कुछ खास नहीं लगा। एक दूसरा खिलौना था जिसमें एक लंबी चोटी वाली गुड़िया टाइपराइटर चला रही थी। बाबा ने उसमें भी अपने हाथों से चाबी भरी और चलाया। बाबा ये सब खेल इसलिए कर रहे थे ताकि मेरे आँसू रुक जायें। आज मैं सोचती हूँ कि इतना बड़ा बाबा, सारे जगत का पिता, स्वयं भगवान जिसके तन में विराजमान है और वह एक बच्चे के आँसू रोकने के लिए कैसे खिलौनों में चाबी भर-भरके चला रहा है। मैं अंदर से गदगद् थी कि यह कौन है जो मुझे इतना प्रेम कर रहा है! मुझे कितने ऊँचे शब्द बोल रहा है। जब मैं कोलकाता में दादा-दादी के पास थी तो 40 लोगों का परिवार था, न इतना धन था, न इतने साधन थे, न ही हमने इतना प्यार देखा था। मुश्किल हालातों में हम बड़े हुए थे। कभी आंगन में, कभी झूले पर, कभी किसी के पैरों में सोकर रात पूरी कर लेते थे। मम्मी-पापा पास थे ही नहीं। मैं बेगर बनकर आबू आई और बाबा मुझे प्रिंस की तरह रख रहे थे। मुझे लगा कि मैं अचानक बेगर से प्रिंस हो गई हूँ। जितना मीठा व्यवहार बाबा ने किया इतना मीठा तो ना घरवालों ने किया, न पड़ोसियों ने किया, तो मुझ पर बाबा के प्यार की छाप लग गई।

बाबा ने मुझमें आत्मविश्वास भरा

एक बार जब मैं बोर्डिंग से पांडव भवन आई तो मैंने देखा, बाबा हिस्ट्री हॉल की तरफ जा रहे थे, मैं भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। हिस्ट्री हॉल में उस समय सीढ़ी का चित्र नया-नया लगा था। बाबा चित्र देखने जा रहे थे। बाबा के साथ कुछ और लोग भी थे। बाबा ने पहले चित्र देखा फिर मुझे समझाया। बाबा के समझाने से लग रहा था कि बाबा को वह चित्र बहुत पसंद है। फिर बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, अब तुम समझाओ। मुझे पता नहीं था कि मेरा इतना जल्दी पेपर हो जायेगा परन्तु सीढ़ी वाला चित्र समझाना बहुत सहज है क्योंकि उसमें सब विवरण लिखा हुआ है। बाबा की आज्ञा का पालन करते हुए मैंने सीढ़ी के चित्र में चारों युगों की बातें बहुत अच्छे से वर्णन की लेकिन संगमयुग का वर्णन करना भूल गई। बाबा ने मुझे मार्गदर्शन दिया कि बच्ची, संगमयुग में तो लिफ़्ट मिलती है जिससे आत्माएँ तुरंत ऊपर चढ़ जाती हैं। फिर मेरी इस समझानी की रिकॉर्डिंग कराके बाबा ने मुरली के साथ लंदन भेजी। इस प्रकार बाबा ने मेरे में आत्मविश्वास और उमंग भरा। किसी में विश्वास रखना, यह बहुत बड़ी बात होती है। बाबा ने मुझ पर विश्वास रखकर मुझे आगे बढ़ाया।

बाबा के अन्न से हुई मेरी पालना

दादा विश्वरत्न हर शनिवार को दो टोकरी लेकर बोर्डिंग में मेरे पास पहुँचते थे। एक में सब प्रकार की टोलियाँ होती थीं और दूसरी में अनेक प्रकार के फल होते थे। इसका कारण यह था कि मैं स्कूल का खाना नहीं खाती थी। मजबूरीवश खाना तो पड़ता था लेकिन मैं प्रेम से नहीं खाती थी। मेरी पालना बाबा के अन्न से ही हुई। मैं वो टोलियाँ खुद भी खाती थी

और सहपाठी बहनों को भी खिलाती थी जिसके कारण सब मेरी सखी बनने को लालायित रहती थी। फिर मैं बाबा को भी सुनाती थी कि बाबा, मैं टोलियाँ दूसरों को खिला देती हूँ तब बाबा कहता था कि बच्ची को और टोलियाँ देना क्योंकि यह दूसरों को खिलाती है। बाबा मुझे जैम, मुरब्बा, बादाम-शहद, और भी भिन्न-भिन्न प्रकार की चीज़ें खिलाते थे। बाबा मेरी बहुत पालना करते थे। बाबा हमेशा कहते थे, बच्ची, कुछ भी चाहिए तो मांग सकती हो, लज्जा नहीं करना। मुझे ऐसा लगता था कि मैं राजकुमारी हूँ। जो भी माउंट आबू में बाबा से मिलने आते थे बाबा उन्हें मेरे से मिलने के लिए कान्वेन्ट ज़रूर भेजते थे।

भोग के प्रति मेरी भावना

मैं जब भी भोग खाती हूँ तो मुझे अहसास होता है कि यह ब्रह्मा बाबा की सच्ची कमाई का अन्न है। सबसे पहले ब्रह्मा बाबा समर्पित हुए। बाद में जिसने भी धन डाला हो लेकिन ब्रह्मा बाबा के मूल धन में वो जादूगरी थी, जो उसके साथ जुड़ने वाले धन से भी बहुत बरकत होती रही। वह जो जादुई धन (magic money) था उसमें मिलकर बाकी धन भी जादुई धन बन गया। बाबा का दिया यह धन खुट नहीं सकता, घट नहीं सकता। भले ही बेगरी पार्ट आया लेकिन वह भी परिपक्व करने के लिए आया। बेगरी पार्ट में भी कोई खाली पेट नहीं रहा, खाया तो अवश्य, भले ही थोड़ा खाया।

बाबा के दिए पेन से दी परीक्षा

जब दादा मेरे से मिलने आते थे तो बाबा को बताकर आते थे कि बाबा, मैं ज्योति से मिलने जा रहा हूँ। बाबा पूछते थे, बच्चे सब कुछ लिया, टोली ली, फल लिया, मुरली ली? फिर बाबा कहते थे, बच्ची को मेरी याद-प्यार देना और अगर बच्ची को कुछ चाहिए तो पूछकर आना। जब दादा मुझसे मिलकर वापस जाते थे तो मैं भी बाबा को याद-प्यार देती थी और दादा मेरा सारा समाचार बाबा को सुनाते थे। एक बार मेरी अपनी एक सहेली के साथ कुछ अनबन हो गई। उसको यह मालूम था कि मेरी कमज़ोरी मेरा पेन है। वह पेन महंगा नहीं था पर उसकी निब बहुत अच्छी थी। उसने मेरा पेन चुरा लिया। मैं उस पेन के बिना नहीं लिख सकती थी। मैं यह सोचकर बहुत रोने लगी कि मैं कैसे लिखूँगी। उस पेन के बिना मैं जैसे मोहताज हो गई। मेरी एक-एक सखी ने मुझे अपना पेन दिया कि तुम इससे लिख लो। मैडम ने भी मुझे अपना पेन दिया कि तुम इससे लिख लो लेकिन मुझे मेरे उसी पेन से बहुत मोह था। आज मैं महसूस करती हूँ कि किसी को भी एक छोटे-से पेन पर इतना आधारित नहीं होना चाहिये परंतु उस समय मुझे इतनी समझ नहीं थी। शनिवार को दादा विश्वरत्न आये। मेरी आँखें रो-रोकर सूज गई थी। मेरी मैडम ने दादा को सारी बात सुनाई।

दादा ने वापस लौटकर बाबा को सब सुनाया कि ज्योति का पेन खो गया था इसलिए वह बहुत रो रही थी। बाबा ने कहा, ईशु बच्ची से पेन लेकर ज्योति बच्ची को दे आना। अगले दिन दादा विश्वरतन आठ पेन लेकर बोर्डिंग पहुँचे, साथ में टोली भी थी। दादा तो कल ही मिलकर गए थे, इतना जल्दी क्यों आ गए, मुझे आश्चर्य लगा लेकिन इसका कारण था मेरा पेन। दादा ने कहा, बाबा ने तुम्हारे लिए पेन भेजे हैं। मैंने एक पेन चलाने की कोशिश की, पसंद नहीं आया। दूसरा चलाने की कोशिश की, पसंद नहीं आया। आखिर में एक पेन मुझे पसंद आया और मैंने रख लिया। दादा ने भी उसी पेन को अच्छा बताया। मुझे भी लगा कि एक पेन तो रख लेना चाहिए क्योंकि बाबा ने इतने प्यार से भेजा है। फिर वह पेन मेरे हाथ में जम गया और मैं उससे लिखने की अभ्यस्त हो गई। जब उस सखी को मालूम पड़ा कि दूसरा पेन मेरे हाथ में जम गया है तो उसने मेरा पहले वाला पेन और एक पत्र मेरे गाउन की जेब में डाल दिया। पत्र में लिखा – तुम बहुत

(शेष..पृष्ठ 34 पर)

स्वयं बाबा ने मुझे अमृतवेले पढ़ाया

• ब्रह्माकुमार शामकांत, पूना

बचपन में हमारी दादी माँ हमें कहानियाँ सुनाती थी। सुनते-सुनते कब नींद आ जाती थी, पता भी नहीं पड़ता था। भारत देश कहानियों का देश है, वीररस पैदा करने वाली छत्रपति शिवाजी महाराज की जीवन कहानी हमें बहुत बल प्रदान करती थी। शनिवार को स्कूल सुबह के समय होता था, दोपहर में हम सब बच्चे किसी एक मित्र के घर में इकट्ठे होते थे। ऐसे ही एक शनिवार को हमारा ग्रुप, एक दोस्त के घर में गपशप लगाने बैठा। हमारे में से एक लड़का (दशरथ भाई) मधुबन, पांडव भवन, माउंट आबू जाकर आया था। वह हर दिन स्थानीय गीता पाठशाला में भी जाया करता था। वहाँ पर शेख इस्माइल भाई उन्हें ज्ञान मुरली सुनाते रहते थे, यह हमें पता था। दशरथ भाई से हमने कहा कि अब आप आबू के अब्बा (बाबा) की कुछ कहानी सुनाओ। उसने तुरंत हाँ जी का पार्ट बजाया और एक अद्‌भुत कहानी का शुभारंभ हुआ –

''सिंध-हैदराबाद में छोटे-से देहात में एक हेडमास्टर रहते थे। उनके परिवार में एक छोटा-सा बच्चा बहुत ही लायक और माँ-बाप को मदद करने वाला था। यह छोटा-सा बालक बड़ा होकर हीरे-जवाहरात का सुप्रसिद्ध व्यापारी बना। उन्हें दादा लेखराज के नाम से सभी जानने लगे। साठ वर्ष की आयु में उन्हें कुछ दिव्य साक्षात्कार हुए जिनमें आने वाली नई दुनिया का नज़ारा देख उनका मन-मयूर नाच उठा, फिर उन्हें ऐसी आवाज़ आई कि तुझे ऐसी दुनिया बनानी है। फिर उनके शरीर में निराकार परमात्मा शिव ने प्रवेश किया। वह शिव भगवान का परकाया प्रवेश (अवतरण) था। शिव परमात्मा उनके माध्यम से ॐ ध्वनि का उच्चारण और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के राज़ खोलने लगे। इस तरह शिव बाबा ने दादा लेखराज को 'ॐबाबा' में परिवर्तित किया और 'ॐमंडली' का शुभारंभ हुआ। फिर शिव बाबा ने 'ॐबाबा' का अलौकिक नामकरण किया और सभी उन्हें 'प्रजापिता ब्रह्मा' नाम से पहचानने लगे। ब्रह्मा बाबा के मुख से ज्ञान-मुरली सुनाई जाने लगी।'' हमारे जीवन को पलटाने वाली यह थी प्यारे ब्रह्मा बाबा की अद्‌भुत जीवन कहानी। कहानी खत्म हुई तो मेरे मन में मुरली के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। मैंने उस भाई से पूछा, 'क्या हमें मुरली मिलेगी?' उसने कहा, 'क्यों नहीं, आप गीता पाठशाला में जाकर इस्माइल भाई से ले लेना।'

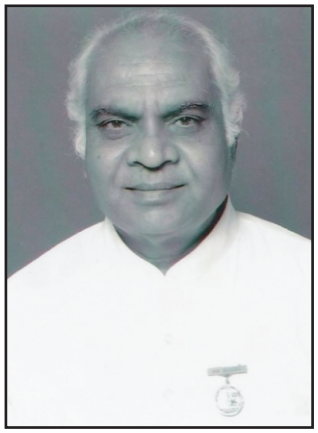

मुरली से मिलने लगा अतीन्द्रिय सुख

दूसरे दिन रविवार था, मैं सुबह-सुबह गीता पाठशाला में पहुँच गया। वहाँ भाई इस्माइल संदली के पास बैठे थे। उनके हाथ में कुछ कागज़ थे जिन्हें वे पढ़ रहे थे, हमें देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई। उन्होंने हमें बैठने को कहा लेकिन हम बैठे नहीं क्योंकि ध्यान तो दीवारों पर लगे चित्रों की ओर था। उनमें से कल्पवृक्ष का चित्र हमें बहुत अच्छा लगा, उसमें नीचे तपस्वी तपस्या कर रहे हैं और ऊपर (झाड़ में) मनुष्यों की मुंडियाँ लटक रही हैं। यह देखकर मुझे 'चंदा मामा' पत्रिका में छपने वाली 'विक्रम और बेताल' की कहानी याद आई कि तुम सत्य बताओ, नहीं तो झाड़ पर लटका दूँगा..। मैं यह सोच ही रहा था कि इस्माइल भाई उठकर चित्र के सामने आए और कहने लगे, 'आओ, हम

आपको समझाते हैं।' हमने कहा, 'हमारी समझ में आया है लेकिन इस वृक्ष के नीचे ब्रह्मा बाबा बैठकर तपस्या कर रहे हैं और ऊपर भी वही खड़े हैं, ऐसा क्यों?' उन्होंने कहा, 'यह जानने के लिए आपको सात दिन का कोर्स करना पड़ेगा।' हमने कहा, 'हमें तो मुरली चाहिए, इसलिए आये हैं।' उन्होंने कागज़ के तीन-चार पन्ने दिये और कहा, 'यह लो मुरली।' हमने कहा, 'मुरली दो, ये कागज़ नहीं'; क्योंकि मुझे लगा कि काठ की बजाने वाली मुरली मिलती होगी। फिर जब उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यही ज्ञान-मुरली है तो मैं उन्हीं कागज़ों को लेकर चल पड़ा। घर में जाकर उन पन्नों को पढ़ना शुरू किया। एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा लेकिन कुछ समझ में नहीं आया। बार-बार पढ़ता रहा। दिनभर में बीस बार भी पढ़े फिर भी कुछ समझ में नहीं आया लेकिन पढ़ने से थकावट भी नहीं हुई। हम मराठी पढ़ते थे, हिन्दी क्लास अभी-अभी शुरू हुई थी, मुरली हिंदी में थी इसलिए भी कुछ ज़्यादा समझ में नहीं आई। हाँ, एक बात समझ में आई कि रामराज्य की स्थापना करने के बारे में ये कुछ कह रहे हैं। मुझे रामराज्य तथा गांधी जी में रुचि थी। ब्रह्माकुमार दशरथ भाई मेरा सहपाठी था, उसके साथ ज्ञान-चर्चा होती रहती थी। हमारा टीचर कभी-कभी क्लास में हिरोशिमा और नागासाकी के विनाश की बातें बताता था, मुरली में भी विनाश की बातें आती थीं अत: रुचि जागी। दूसरे दिन मुरली लौटाने गीता पाठशाला में गया और दूसरी मुरली लेकर वापस आया। ऐसा सिलसिला चलता रहा। स्कूल में भी मुरली पढ़ता रहा। फिर पढ़ते-पढ़ते मुरली के प्यार में मस्ताना हो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने लगा। मुरली में जादू है, यह महसूस होने लगा। मुरली से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होता रहा। जीवन प्रभु-प्यार में आनंदविभोर होने लगा। समय बीतता गया।

प्रकाशमय शरीर द्वारा बापदादा ने मुझे पढ़ाया

एक मुरली में बाबा ने कहा कि शिव बाबा किसी को भी कहाँ भी जाकर पढ़ा सकते हैं। हमने यह बात इस्माइल भाई को बताई। उन्होंने कहा, 'इसके लिए सुबह चार बजे योगाभ्यास करना पड़ता है।' हमने कुछ दिन घर में अमृतवेले उठकर मुरली पढ़कर योग किया लेकिन अनुभव नहीं हुआ। न बाबा आये, न हमें पढ़ाया। हमने यह बात इस्माइल भाई को बताई। उन्होंने कहा, 'सुबह दो-ढाई बजे उठकर योग करो।' हमने कहा, 'यह घर में नहीं हो सकता, घर वाले डाँटेंगे, हम यहाँ सोने के लिए आयें तो चलेगा?' उन्होंने कहा, 'अपना बेडिंग लेकर आ जाना।' उसी रात को बिस्तरा लेकर हम गीता पाठशाला पहुँच गये। रात के नौ बजे होंगे। उन्होंने जगदीश भाई की लिखी किताब 'सच्ची गीता' हमें दी और कहा, 'इसे सोने से पहले पढ़ना।' पहला पन्ना पढ़ा। उसमें कौरव, पांडव, यादव सेना का वर्णन था और महाविनाश का भी ज़िक्र था। नई दुनिया का भी संकेत था। किताब बहुत बड़ी थी। थोड़ी पढ़ने के बाद उसे तकिये के नीचे रख लिया और संकल्प किया कि यह हमारे दिमाग में आयेगी क्योंकि सिर के नीचे रखी है और फिर सो गये। उस समय हमारी यह धारणा थी कि तकिये के नीचे किताब रखकर सोने से वह ज्ञान अपने दिमाग में आ जाता है। सुबह हमारी नींद खुल गई। गीत बज रहा था, जाग सजनिया जाग, नवयुग आया..। हम उठकर बैठ गये। तभी सामने वाली खिड़की से सर्चलाइट का फोकस हमारी ओर आने लगा। उसमें धीरे-धीरे परिवर्तन होता गया और लाइट में सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा बाबा खड़े हुए दिखाई दिये। वे प्रकाशमय फ़रिश्ते रूप में मेरी ओर बढ़ने लगे। मुझे बहुत खुशी हो रही थी, ब्रह्मा बाबा का लाइट का शरीर नज़दीक आते ही मैंने उन्हें बैठाने के लिए ओढी हुई चद्दर उठाई तो बाबा ने हाथ के इशारे से मुझे रोका और मेरे सामने ही गीता पाठशाला की संदल पर, जैसे मधुबन

में अर्धपद्मासन में बैठकर मुरली सुनाते थे, ऐसे बैठ गये और मुरली सुनाने लगे। मुझे आकाशवाणी जैसी सुमधुर आवाज़ ने विदेही बना दिया। इसमें एक घंटा कैसे चला गया, पता ही नहीं पड़ा। घड़ी में देखा तो सुबह के साढ़े तीन बज गये थे। अव्यक्त बापदादा का वह प्रकाशमय शरीर कुछ ही क्षणों में गुम हो गया। मैं आनंद रस में मग्न था। अतींद्रिय सुख के नशे में झूम रहा था। ऐसे तीन मास तक लगातार प्रतिदिन सुबह ढाई बजे बाबा का आना और साढे तीन बजे तक मुरली सुनाना चलता रहा। एक दिन मुझे थोड़ा-सा शक आया कि साकार मुरली के प्रारंभ में गीत बजता है और अंत में बाबा कहते हैं, 'मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते', यह तो कहते ही नहीं हैं। दूसरे दिन सुबह-सुबह सुंदर गीत बज रहा था, आज अंधेरे में है इन्सान, ज्ञान का सूरज चमका दो भगवान.. और मेरी नींद खुल गई। बाबा लाइट के शरीर से प्रकट हुए और मुरली चलाई जैसे मधुबन में चलती है (मैंने मधुबन देखा नहीं था)। अंत में बाबा बोले, 'मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।' बाबा के ये वचन सुनकर मुझे पूरा निश्चय हुआ कि यही ब्रह्मा बाबा हैं। फिर बाबा उठकर खड़े हुए और सूक्ष्म बनते मुझे अपनेपन की अनुभूति कराते हुए चले गये। तीन मास के बाद हमने यह बात सभी को बताई क्योंकि तब तक हमें विश्वास हो गया था कि मुरली के कहने प्रमाण बाबा हमें कहाँ भी पढ़ा सकते हैं। फिर अगले दिन अमृतवेले मैं ढाई बजे उठकर बैठ गया लेकिन उस दिन न बाबा आये, न मुरली सुनने को मिली। मैं ऐसे ही बैठा रहा.. प्रभु पिता की राह देखते.. लेकिन इस पढ़ाई के अनुभव का पार्ट यहाँ ही बंद हो गया। इन तीन मास में हमने यह महसूस किया कि बाबा जो हर दिन मुरली सुनाते थे, वह मधुबन वाली ही थी क्योंकि हमने गीता पाठशाला के प्रति पूना से आने वाली मुरलियों को पढ़ना भी जारी रखा था। मेरी कॉपी में सुबह के समय लिखी गई मुरलियों से वे हूबहू मिलती थीं। मुझे बहुत खुशी हुई कि बाबा ने मुझे सूक्ष्म शरीर से साकार की अनुभूति कराई और मुरली भी चलाई।

बाबा की मदद से भाषण किया

फिर गांधी जयंती आई। स्कूल में सभी को भाषण करने के लिए कहा गया। मुझे उस समय प्रेरणा आई कि रामराज्य के बारे में बताना चाहिए। मैं भाषण करने के लिए चल पड़ा पर इतनी बड़ी सभा (1200 बच्चे) को देखकर घबरा गया। फिर भी हिम्मत कर मैंने बच्चों को कहा, हमारे पीछे गांधी जी की प्रार्थना दोहराना। बच्चे दोहराने लगे पर मैं 'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम', इतना कहकर आगे की पंक्तियाँ भूल गया। मुझे पूरी प्रार्थना याद नहीं थी। अध्यक्ष ने नीचे बैठने का इशारा किया। मैंने उनसे कहा कि मुझे भाषण करना ही है। फिर प्रार्थना दोहराई लेकिन उस समय प्रार्थना के लास्ट के चरण ही याद आये, 'सबको सन्मति दे भगवान' और मेरे दिमाग में भगवान शब्द गूंज उठा ..भगवान..भगवान.. और भगवान..। भाषण का शुभारंभ हुआ – 'रामराज्य कैसा होगा.. वहाँ पर संपूर्ण ब्रह्मचर्य होगा..योगबल से बच्चे पैदा होंगे..शेर-बकरी एक घाट पर पानी पीयेंगे..सोने, हीरेजड़ित महल होंगे..'' इस प्रकार दस मिनट हिंदी में बढ़िया भाषण किया। सभी ने बहुत तालियाँ बजाईं और सभी टीचर्स ने भी बहुत सराहना की। उस समय का भाषण अब तक भी मुझे लिपिबद्ध करना नहीं आया क्योंकि वह परमात्मा की मदद थी। मेरा अपना कुछ भी पुरुषार्थ तो था ही नहीं। उसी दिन से मुझे दृढ़ विश्वास हुआ कि शिव बाबा बच्चों से वक्तव्य भी करा सकते हैं। ब्रह्मा बाबा के तन में भी ऐसे ही प्रवेश करके शिव बाबा मुरली चलाते होंगे, ऐसा मुझे लगा। ❖

भाग्यविधाता ने बनाया मेरे भाग्य को उज्ज्वल

• ब्रह्माकुमारी शुक्ला, दिल्ली (हरिनगर)

पवित्रता के सागर परमात्मा शिव की अनेक लीलाएँ साकार दुनिया में साकार ब्रह्मा द्वारा देखने का परम सौभाग्य शुक्ला बहन जी को प्राप्त हुआ है। आपने वरदाता से अनेक वरदानों को प्राप्त करके जीवन को महान बनाया है। आप अपनी अनुभवयुक्त, प्रभावशाली वाणी से जिज्ञासुओं के मन पर अमिट छाप छोड़ती हैं। आपका पवित्र और योगी जीवन प्रेरणास्पद रहा है। आपने देश-विदेश की हज़ारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन करा कर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। आप सुरक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका भी हैं। आप वर्तमान समय हरिनगर (दिल्ली) में तथा ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ज़िम्मेवारियों को संभालते हुए सेवारत हैं। इस प्रकार श्रेष्ठ ईश्वरीय सेवा व योग साधना में रत शुक्ला बहन जी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं।

– ब्रह्माकुमारी अनुसूईया, दिल्ली

मेरा जन्म सन् 1936 में अमृतसर (पंजाब) के एक धार्मिक तथा सम्पन्न परिवार में हुआ। लौकिक परिवार के संस्कार अनुसार मुझे बचपन से ही शास्त्र पढ़ने, देवताओं की पूजा करने, हवन करने, मंत्र आदि पढ़ने में बहुत रुचि थी।

सन् 1954 में ब्रह्माकुमारी बहनें अमृतसर आई थीं। लौकिक माता जी मुझे भी वहाँ सत्संग में ले गईं। मुझे वहाँ का पवित्र वातावरण तथा ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रैक्टिकल जीवन बहुत अच्छा लगा। एक दिन वहाँ की निमित्त बहन ने मुझे बताया कि 12 घण्टे का योगाभ्यास होगा, जिसमें हम भगवान से मिल सकते हैं। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि मुझे भी योगाभ्यास में बैठना ही है। इस योग-भट्ठी में मुझे अनेक अलौकिक अनुभव हुए। कभी तो मैं स्वयं को एक दिव्य शक्ति के रूप में अनुभव करती और कभी लगता कि ज्ञान-सूर्य से अथाह शक्तियाँ स्वयं में भर रही हूँ। मैंने अपने सामने कई बार चमकती हुई प्रखर ज्योति भी देखी, जिसको मैं परमात्मा का स्वरूप मानती हूँ। परिणामस्वरूप मेरी वृत्ति संसार की सभी बातों तथा सर्व सम्बन्धों से उपराम होने लगी।

मेरे लौकिक सम्बन्धी मेरी ऐसी हालत को देखकर कहने लगे कि यह तो जैसे मीरा बन गई है। मेरी बढ़ती हुई ईश्वरीय लगन मेरी लौकिक माता जी को अच्छी नहीं लगी।

सन् 1956 में पिताश्री जी और मातेश्वरी जी अमृतसर आये हुए थे। क्लास में ग्रामोफोन चलाने की ड्यूटी मेरी थी। जैसे ही पिताश्री जी बच्चों से मिलने क्लास रूम में पधारे, मैंने ग्रामोफोन पर गीत बजाया – 'तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो...', गीत के अन्त में 'तुम्हारे चरणों की धूल...' यह लाइन आते ही बाबा ने कहा कि गीत बंद करो। तत्पश्चात् बाबा ने बड़े प्यार से अपने पास बुलाकर स्नेह भरी दृष्टि देते हुए मुझे कहा – 'मीठी बच्ची, आप चरणों की धूल नहीं हो, आप तो बाबा की मस्तकमणि हो।' ये वरदानी बोल सुनकर तो मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया और आँखों से प्रेम की अश्रुधारा बहने लगी। बाबा ने मुझे ऐसा वात्सल्य दिया, जोकि अविस्मरणीय और अविनाशी है। इस तरह, पिताश्री और मातेश्वरी की पालना तथा दादी जानकी जी, दादी कुँज जी, दादी निर्मलशान्ता जी, दादी चन्द्रमणि जी जैसी महान तपस्विनियों की पालना से, समर्पित होकर सेवा

करने की मेरी लगन तीव्रता से बढ़ती गई। लेकिन लौकिक माता जी मोहवश सोचने लगी कि अब तो यह बच्ची शादी नहीं करेगी, इसलिए लौकिक सम्बन्धियों द्वारा मुझे शादी करने के लिए मनाने का प्रयास करने लगी लेकिन मैं अपने लक्ष्य पर अटल थी। कभी-कभी बाबा के बोल कानों में गूँजते थे कि बच्ची, तुम्हें महान कार्य करना है। कौन-सा महान कार्य करना है, यह समझ में नहीं आता था।

सन् 1959 में मातेश्वरी जी का अमृतसर में पुनः आगमन हुआ। समाचार मिलते ही मेरी लौकिक माता जी मातेश्वरी जी से मिलने सेवाकेन्द्र पर पहुँची, उनके समक्ष रोने लगीं और आग्रह करने लगी – मम्मा, शुक्ला को समझाओ कि शादी करे। उसको शादी करनी ही पड़ेगी, नहीं तो लौकिक परिवार में बहुत डिससर्विस होगी। मुझे मातेश्वरी जी ने बुलाया और मेरी जन्मपत्री को देखकर कहा कि आपको शादी करनी है और लौकिक माँ का उद्धार करना है। मैंने मातेश्वरी जी से कहा कि मुझे गृहस्थी जीवन बिल्कुल पसंद नहीं। माता जी अपनी जिद्द पर थीं। वह मातेश्वरी जी से कहने लगीं कि आप ही कोई लड़का बताइये, मुझे इसकी शादी करनी ही है। मातेश्वरी ने मुझे बहुत समझाया, तत्पश्चात् मैंने शादी करने के लिए हाँ कर दी। मैंने कहा कि मैं उसी से शादी करूँगी जो मुझे ब्रह्मचर्य की पालना करने में मददगार बनेगा।

पिताश्री जी ने मेरा गंधर्व विवाह कराया

उन्हीं दिनों में मुझे बताया गया कि दिल्ली में एक कुमार सुन्दरलाल जी हैं, जोकि 4-5 वर्षों से ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विद्यार्थी हैं और पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं, लेकिन उनके लौकिक सम्बन्धी विवाह के लिए उनको बहुत मज़बूर कर रहे हैं। यह समाचार मम्मा-बाबा को मिलते ही उन्होंने चन्द्रमणि दादी जी द्वारा संदेश भेजा कि जब दोनों ही ईश्वरीय ज्ञान मार्ग पर चलते हुए पवित्रता को जीवन में अपनाना चाहते हैं तो दोनों को विवाह करके, पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए बाबा स्वीकृति देते हैं। इसके बाद, दोनों के लौकिक सम्बन्धियों ने आपस में विचार-विमर्श करके विवाह निश्चित किया और दिनांक 10 दिसम्बर, 1960 में दिल्ली के बिरला मन्दिर के पास हिन्दू महासभा भवन में हम दोनों का गंधर्व विवाह अलौकिक रीति से सम्पन्न हुआ।

गंधर्व विवाह के बाद डेढ़ वर्ष तक हम दोनों, सुन्दरलाल जी के लौकिक माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों सहित एक ही परिवार में रहे। प्रतिदिन प्रातःकाल ईश्वरीय ज्ञान की क्लास करने सेवाकेन्द्र पर जाते थे, जिससे कमल-पुष्प समान पवित्र जीवन व्यतीत करने में बहुत मदद मिली। राजयोग का अभ्यास नियमित करने से जीवन में दिव्य गुणों की धारणा होती गई। पिताश्री की पालना में पलते दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती रही।

जब बाबा अव्यक्त हुए

आखिर सृष्टि नाटक मंच पर वो दिन भी सामने आया जब बाबा अव्यक्त हुए। ऑलराउण्डर दादी जी ने हमें यह सूचना दी थी। समाचार सुनते ही सारे शरीर में बिजली-सी कौंध गई। मन में तेजी से विचारों की तरंगें उठ रही थीं। जहाँ एक ओर इस विदाई की उदासी छाई हुई थी, वहाँ दूसरी ओर उनके कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करके, सर्वोच्च देवपद के एकमात्र अधिकारी बन जाने की बहुत खुशी भी थी। तत्पश्चात् मैं शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली से मधुबन पहुँची। बाबा का पार्थिव शरीर सभा-कक्ष में रखा था, चारों तरफ से उस महानतम् विभूति के अन्तिम दर्शन की अभिलाषा से हज़ारों वत्स स्नेह-मोती नयनों में छिपाये मधुबन पहुँचे। मुझे पूर्ण निश्चय था कि बाबा का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा।

मैंने बाबा में क्या-क्या देखा

पिताश्री जी का व्यक्तित्व अद्वितीय था – देखने से ही लगता था कि ऐसा व्यक्ति करोड़ों में खोजने पर भी नहीं मिलेगा। लम्बा-स्वस्थ शरीर, प्रशस्त और उन्नत ललाट, तीक्ष्ण और मर्म-भेदिनी आँखें, देखने वालों पर अमिट प्रभाव डालती थी। गौर वर्ण पर श्वेत बाल, श्वेत वस्त्र अनोखी छटा उत्पन्न करते थे। उनके बाहर या भीतर कहीं

भी कालिमा का नामो-निशान तक नहीं था और 93 वर्ष की आयु में भी चेहरे पर कहीं झुर्रियाँ नहीं थी। नेत्र इतने निरोग थे कि नेत्र विशेषज्ञ भी आश्चर्य खाते थे। उन्हें न तो पढ़ने-लिखने के लिए और न दूर देखने के लिए ही चश्मे की आवश्यकता थी। वाणी इतनी मधुर किन्तु गंभीर थी कि कई दिनों तक कर्ण-कुहर में गूँजती रहती थी। चेहरे पर चिर-परिचित मुस्कराहट सदा खेलती रहती थी। न तो कभी किसी ने पिताश्री जी को जोर से हँसते देखा और न उदास होते। वे अत्यन्त अल्प भोजन ग्रहण करते थे, फिर भी वे शक्ति के भण्डार थे। अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी कभी भी उनसे थकावट की भासना नहीं आई। निद्रा पर तो उन्होंने पूर्ण विजय प्राप्त कर ली थी। शायद ही 3-4 घण्टे सोते थे, बाकी सारा समय वे परमप्रिय शिव बाबा की पतित-पावनी याद में रह ईश्वरीय सेवा में पूर्णरूपेण तत्पर रहते थे।

पिताश्री बेसहारों के सहारा थे – एक माता थी, पाकिस्तान में उसका सब कुछ लुट गया था। भारत आने पर उसके पति की भी मृत्यु हो गई। वह अपना पेट मज़दूरी कर पालती थी। एक बार वह पिताश्री से मिलने मधुबन स्वर्गाश्रम में गई। कुछ समय रहने के पश्चात् अपने घर लौटने की इच्छा प्रकट की। पिताश्री ने कहा – बेटी, यह तुम्हारा अपना घर है और तुम भी इस ईश्वरीय सेवा में लग जाओ। माता ने कहा, मैं तो अनपढ़ हूँ। बाबा ने उसके लिए यथा योग्य एक शिक्षिका का प्रबन्ध कर दिया। इस प्रकार बेसहारों को सहारा दे, उन्हें समाज में सम्मानित स्थान दिलाया।

स्वयं मेहनत करके दिखाना – बाबा ईश्वरीय सेवार्थ अथवा लोक-कल्याणार्थ तन-मन-धन समर्पण करने के बाद वृद्ध शरीर होते हुए भी निरन्तर सेवा में लगे रहते। सेवा-सेवा-सेवा, बस सेवा ही के लिए और मनुष्यात्माओं को सुख देने के लिए ही उनका विचार चलता रहता था। वे कहते – बच्चे! यज्ञ की सर्विस बड़ी मधुर और प्यारी लगती है। यदि मैं शरीर का कोई कार्य नहीं करूँगा तो मुझे कैसे निरोगी और कंचन काया मिलेगी? बच्चे, सर्विस करने की तो लालसा होनी चाहिए। दधीचि ऋषि के समान इस यज्ञ में हड्डियाँ भी दे देनी चाहिएँ, तभी तो शरीर पावन बनेगा।

सोते समय भी दूसरों को सुख देने का ख्याल – गर्मियों की छुट्टियों में अधिकतर ज्ञानी परिवार बाबा से मिलने मधुबन स्वर्गाश्रम में जाते। एक दिन रात्रि की नीरवता में किसी बालक के रोने की आवाज़ आई। बाबा ने बच्चे के रोने का कारण जानना चाहा तो बच्चे की माँ ने कहा, बच्चे को रात्रि को दूध पीने की आदत है। यह सुनकर बाबा ने दूध का अपना थर्मस मँगाया और उस माता को दे दिया।

विदेश सेवा में जाना हुआ

सन् 2006 में मुझे दादी जानकी जी की स्वीकृति से यू.के., जर्मनी, हॉलैण्ड, फ्राँस, इटली, स्पेन आदि देशों में ईश्वरीय सेवार्थ जाने का सुनहर अवसर प्राप्त हुआ। साथ में सुन्दरलाल जी भी थे। सेवा के दौरान बहुत सुन्दर, अलौकिक अनुभव भी हुए। वर्तमान समय हरिनगर (दिल्ली) में विभिन्न वर्गों की बहुत अच्छी सेवाएँ चल रही हैं। इससे संबंधित लगभग 60 सेवाकेन्द्र तथा उप-सेवाकेन्द्र खुले हैं। मैं सदा ध्यान देती हूँ कि बाबा और मधुबन की याद से स्वयं को लाइट रखूँ। सेवा क्षेत्र में व्यस्त रहते भी डबल लाइट रहकर, सदा उड़ती कला की अनुभूति करती रहूँ।

दूसरी बात, मैं अपनी बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रखती हूँ ताकि बाबा की समय-प्रति-समय स्व-उन्नति के लिए और विश्व-सेवा के लिए विशेष प्रेरणाएँ प्राप्त कर सकूँ। उस भाग्यविधाता भगवान की इतने वर्षों की अनोखी पालना ने मेरे भाग्य को उज्ज्वल बना दिया है। भक्तिकाल में किये गये पुण्य कर्मों का यह प्रत्यक्ष फल मिला है कि हम इस अन्तिम जन्म में भगवान के साथ हैं। अभी यही उमंग रहता है कि जल्दी-से-जल्दी अपनी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करके, वसुंधरा पर आए हुए भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अंधकार में भटकती हुई करोड़ों आत्माएँ अपने प्राण प्यारे बाप से अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त कर लें। ❖

बाबा ने सब संकल्प साकार किये

• ब्रह्माकुमारी दुलारी, बी.के.कालोनी

बाल्यकाल से ही मैंने भक्ति शुरू की। ससुराल कोलकाता में थी, वहाँ भी भक्ति-भाव बना रहा। तीन गुरु किये, फिर भी शान्ति नहीं मिली। भगवान से मिलने की बहुत प्यास थी। गंगा जी में डूबने का प्रयास भी इसलिए किया कि शायद इसी से भगवान मिल जायें पर डूबने से बच गई। छिप-छिपकर दान-पुण्य भी बहुत करती थी। मेरी बड़ी बहन दिल्ली में ईश्वरीय ज्ञान में चलती थी। एक बार उनसे मिलने आई तो वे बोली, ऐसे ही धक्के खाती फिरती हो, भगवान तो धरती पर आ चुके हैं। मैंने कहा, मैंने तीन-तीन गुरु किये, इतने तीर्थ किये, मुझे तो भगवान मिले नहीं, तुझे कैसे मिल गये? उस समय मेरा पार्ट नहीं था, इसलिए मुझ पर ज्ञान का रंग नहीं चढ़ा, मैं ससुराल वापस चली गई।

बाबा से मिलने की तड़प जगी

व्यवसायिक कारणों से हमें कोलकाता छोड़ दिल्ली आना पड़ा, हम दिल्ली में रहने लगे। बहन का घर पास में ही था। युगल के ऑफिस जाने के बाद बहन मुझे ज्ञान सुनाती थी। बहन की बेटी (पुष्पा बहन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली) ज्ञान में चलती थी। वह भी जब घर आती तो ज्ञान सुनाती थी। मैंने बहन को कहा, अगर भगवान आ गये हैं तो मुझे उनसे मिलवा। उसने कहा, भगवान से मिलने के लिए माउंट आबू चलना पड़ेगा। मैंने कहा, ले चल। उसने कहा, ऐसे नहीं चल सकेगी, सात दिन का कोर्स करना होगा। मैंने कोर्स करना शुरू कर दिया। कोर्स करते-करते मुझे दो बातें बहुत अच्छी लगी – (1) भगवान आये हैं पावन बनाने और (2) भगवान आये हैं साथ ले जाने। इन बातों को सुनकर मुझे पक्का निश्चय हो गया कि भगवान धरती पर आ चुके हैं। कोर्स कराने वाली बहन कोर्स कराती तो मैं कहती, मुझे और सुना। वो कहती, यह बहुत ताकत वाला माल है, हज़म नहीं होगा। पहले जो सुना है वो मुझे कल सुनाना फिर आगे सुनाऊँगी। काम करते-करते मैं ज्ञान की बातें दोहराती रहती। एक दिन पति ने पूछा, किससे बातें करती रहती हो? मैंने कहा, मैं कोर्स करने जाती हूँ, वही ज्ञान दोहरा रही हूँ। तीन दिन के कोर्स के बाद बाद मन में तड़प उठी कि मैं बाबा से मिलूँ। मुझे देख मेरी जेठानी भी ज्ञान में आ गई। पति ने भी ज्ञान सुना लेकिन धारणा की बात पर वह अटक गया।

बाबा ने सौगात भेजी

मेरी लौकिक-अलौकिक बहन आबू जा रही थी, मैंने उनके साथ 10 रुपये यज्ञ सेवा के लिए भेजे और बाबा से यह पूछने के लिए कहा कि दुलारी बहुत तड़पती है, रोती है, वह आपसे कब मिलेगी? बाबा का जवाब आया – 'बच्ची से कहना कि वह बाबा से ज़रूर मिलेगी।' बाबा ने श्रीकृष्ण की तस्वीर वाला एक पर्स भी सौगात में मेरे लिए भेजा।

जिसे मैं ढूँढ़ रही थी वो मिल गया

मुझे ज्ञान में चलते पाँच महीने हो गए थे। एक-एक मिनट एक वर्ष के समान लगता था। बार-बार बाबा से मिलने की तड़प उठती थी। जब भी घर के कामकाज से छुट्टी मिलती तो सेन्टर चली जाती थी। पति कोलकाता गया तो मैंने दादी कमलमणि को कहा, मुझे आबू ले

चलो। दादी ने कहा, पति की अनुमति के बिना नहीं ले जा सकते, वह आयेगा तो झगड़ा करेगा। जब मैंने दादी से बहुत विनती की तो दादी मुझे, बड़ी बहन के साथ आबू ले आई। मैंने पति को चिट्ठी लिखकर बता दिया कि मैं बाबा से मिलने आबू जा रही हूँ। गाड़ी में बैठते ही लगता था कि कब आबू आयेगा और कब मैं बाबा से मिलूंगी। आबू पहुँचे तो यह ललक लगी कि कब बाबा का भवन आयेगा। जब पांडव भवन पहुँचे तो बाबा से मिलने की तड़प हुई। बहन ने कहा, जो पार्टी सवेरे आती है, उससे बाबा रात को मिलते हैं और जो रात को आती है, उस पार्टी से सुबह मिलते हैं। यह सुनते ही मेरे तो प्राण ही निकल गये। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। बाबा हिस्ट्री हॉल से मुरली पूरी कर निकल रहे थे। बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी। बाबा को देखते ही लगा, जिसको मैं ढूँढ़ रही थी, वो मुझे मिल गया। पाना था सो पा लिया, और क्या बाकी रहा। आधा घंटा बाबा वहाँ खड़े होकर मुझे दृष्टि देते रहे। उस दृष्टि ने मुझ आत्मा के अंदर शक्ति भर दी। फिर बाबा ने कहा, मेरी बच्ची आ गई, मेरी छोटी बिजली (मेरी बड़ी बहन को बाबा बिजली कहते थे) आ गई। ऐसा तीन बार कहा। मेरी आँखों में प्यार के आँसू आ गये।

बाबा ने अपने हाथों से फल खिलाए

नहा-धोकर जब हम दोनों बहनें बाबा के कमरे में गईं, बाबा के हाथ में चांदी की छोटी-सी प्लेट थी जिसमें कटे हुए फल रखे थे। छोटा-सा कांटा था। बाबा ने हमें अपने हाथों से फल खिलाये। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची, तेरे कितने बच्चे हैं? मैंने कहा, मेरा तो एक शिव बाबा ही बेटा है। बाबा ने फिर पूछा, पहले भी बाबा से मिली हो? मैंने कहा, हाँ बाबा, पाँच हज़ार वर्ष पहले भी मिली थी। फिर बाबा ने बड़ी दीदी (मनमोहिनी दीदी) को कहा, मेरी बच्ची के लिए असली घी का हलुवा बनाओ, मेरी बच्ची आई है इसे रसगुल्ला खिलाओ। सारा स्टॉक खोलकर दिखाओ, दिलवाला मंदिर दिखाकर आओ। मैं फ्री हूँ, जब इस बच्ची का मन हो, मेरे पास ले आना।

बाबा के मस्तक में दिखाई दिया लाल प्रकाश

फिर तो मैं हर रोज सवेरे और रात को बाबा को गुडमार्निंग और गुडनाइट करने जाती। जहाँ बाबा जाते, मैं भी पीछे-पीछे जाती। मैं बाबा के कमरे में ही बैठी रहती। पीछे बैठकर बाबा को देखती रहती। मेरा मन करता, बाबा को देखती ही रहूँ। अज्ञान काल में मैंने बहन को बोला था कि यदि भगवान आया हुआ है तो मुझे मेरे सभी इष्ट देवी-देवताओं का साक्षात्कार कराये। पांडव भवन की पहली रात को मुझे शिवबाबा, ब्रह्मा बाबा और अनेक देवी-देवताओं का साक्षात्कार हुआ। उस रात मुझे यह संकल्प भी आया कि मैं सुबह चार बजे का योग कराऊँ। संकल्प करने की देर थी कि लच्छू दादी आई और बोली कि बाबा ने कहा है कि दुलारी सवेरे का योग करायेगी। हिस्ट्री हॉल की संदली पर बैठ मैंने अमृतवेले का योग कराया। मुरली क्लास में मुझे बाबा के मस्तक में लाल प्रकाश का गोला दिखाई दिया। बाबा ने मुरली सुनाई। मेरी नज़र बाबा से हटती नहीं थी। मुझे संकल्प आया कि आज क्लास की टोली मैं बाँटूं। मुरली पूरी होने पर बाबा ने कहा, बच्चे उठो, टोली बाँटो। मैंने बहन को इशारा किया (कि क्या मैं बाँट सकती हूँ), बहन ने दादी से पूछा तो दादी ने मना कर दिया। फिर बाबा ने मेरी तरफ इशारा करके कहा, बच्ची, उठो, टोली बाँटो। इस प्रकार मेरा हर संकल्प साकार होता रहा।

बाबा से मिला सच्चा निःस्वार्थ प्यार

तीसरे दिन बाबा ने मुझसे कहा,

बच्ची, तुम पति की छुट्टी के बिना आई हो, अभी जाओ, फिर पति की छुट्टी लेकर आना। मैं बहुत रोई। बड़ी दीदी कमरे में आई, बोली, बाबा को यही प्रेरणा आ रही है, तुम्हारे जाने में ही कल्याण है। जाते वक्त बाबा ने कहा, बच्ची, तेरा पति जो पहनने दे, वो साड़ी सौगात में ले ले। मैंने कहा, मैं नहीं लूँगी। बाबा ने कहा, नहीं, बाप के घर आई हो तो बाप जरूर सौगात देगा। तो मैंने सफेद रंग की साड़ी जिसमें हलकी कढ़ाई थी, ले ली। मैंने बाबा से पूछा, बाबा, पति ज्ञान में चलेगा? बाबा ने कहा, बच्ची, तेरे पति का पिछले 63 जन्मों से तेरे पर कर्ज़ है। तू पिछले जन्म में इसका पति थी, तूने इसको बहुत दुख दिया था, उसका बदला यह अंत तक लेगा, तू चाहेगी, इसको छोड़ दूँ पर छोड़ नहीं पायेगी। फिर मैंने बाबा से पूछा, बाबा मेरा जो कुछ है, वह यज्ञ में सफल होगा? तो बाबा ने कहा, बच्ची, देहधारी खायेंगे, तेरा सफल नहीं होगा। विदाई के समय गीत बजता था, भगवान तेरे घर का शृंगार जा रहा है। जाते वक्त मैं पीछे मुड़-मुड़कर बाबा को देखती रही, बाबा हाथ हिलाकर विदाई देते रहे। मैं तीन दिन मधुबन में रही, बाबा ने मेरे सारे संकल्प पूरे किए, अपने बिछड़े पिता से मिलकर मन को सच्ची शान्ति मिली। मैं प्यार की भूखी थी। जो सच्चा नि:स्वार्थ प्यार बाबा और बड़ी दीदी ने दिया, कोई भी संबंधी दे नहीं सकता। इस प्यार का वर्णन नहीं कर सकती। यह तो गूंगे की मिठाई है। बाबा का यही प्यार और दृष्टि की शक्ति मुझे आज तक चला रही है।

पति ने किया विरोध

दिल्ली पहुँचने पर बाबा की चिट्ठी दादी कमलमणि के पास आई जिसमें बाबा ने पूछा था, मेरी बच्ची बिना छुट्टी लिए आई थी, उसे पति ने मारा तो नहीं? दो दिन बाद पति कोलकाता से आ गया। उसने धारणा तोड़ने की बात कही। मैं अडिग रही। फिर उसने दूसरी शादी कर ली। मैंने उससे कुछ नहीं मांगा। सब कुछ नई बहू को दे दिया। मैं पुराने मकान में रही, वे दूसरे मकान में चले गये। मैंने सेन्टर पर जाकर सेवाकार्यों में हाथ बँटाना शुरू कर दिया। नई बहू गरीब विधवा थी, अपने साथ दो बेटियाँ लाई थीं, एक बेटा एक बेटी बाद में पैदा हुए। चार-पाँच साल तक तो सब ठीक चला। बाद में पति ने रोना शुरू कर दिया। सभी रिश्तेदारों को कहने लगा, मैंने दूसरी शादी करके बहुत बड़ी गलती की। बीवी, बच्चे सामने बोलते हैं, धंधा मंदा हो गया है। वो (दुलारी) तो मेरी बहुत सेवा करती थी, यह तो मुझे ढंग से खाना बनाकर भी नहीं खिलाती। मुझे इसके साथ नहीं रहना, ब्रह्माकुमारी (दुलारी) को बोलो कि मुझे अपने पास रख ले। सबने मुझसे पूछा, क्या उसको अपने साथ रखोगी? मैंने कहा, मेरे पास रहना था तो शादी क्यों कराई? मैंने तो अपना जीवन सेवा में लगा दिया है, अब मैं जंजाल में क्यों फँसूं?

पति ने माफी माँगी

पति बहुत बीमार रहने लगा। उसके कई फोन आये, मैं नहीं गई। रिश्तेदारों को कहा, एक बार उसे ले आओ, मैं उससे माफी मांग लूँ। आखिरकार, बहुत बुलावे आने पर दादी की आज्ञा से मैं सेन्टर के एक भाई को साथ लेकर मिलने गई। मुझे देखते ही उसने मेरे पैर पकड़ लिये, कहने लगा – तू मुझे माफ कर दे, तू शिवशक्ति है, दुर्गा है, काली है। मेरे पैरों पर सिर रखकर कहा, मुझे अपने साथ ले चल, ये मुझे बहुत दुख देते हैं। मैंने कहा, आप अच्छे हो जाओ फिर मैं आपको आबू ले चलूंगी। मन ही मन बाबा से भी कह रही थी, बाबा, इस आत्मा को शान्ति दो। बेटे-बहू ने कहा कि बाबू जी रात को घबराकर उठ जाते हैं, कहते हैं, मुझे बहुत बड़े-बड़े पत्थर लग रहे हैं, मैं पिंजरे में बैठा हूँ, चारों तरफ काले

भूत मुझे डरा रहे हैं, शिव बाबा मुझे सज़ा दे रहे हैं। फिर कहा कि आप इसे माफ कर दें। मैंने कहा, मेरे दिल में तो कुछ नहीं है, माफी मांगनी है तो शिव बाबा से मांगो। दूसरी पत्नी ने कहा, ये बार-बार फांसी खाना चाहते हैं। आप इन्हें अपने साथ ले जाओ, हमें पहरा देना पड़ता है।

कर्मबन्धन से मुक्ति

मैंने कहा, आप तो पहरा दे सकते हो। मैं तो अकेली हूँ, कैसे पहरा दूंगी। पति को ईश्वरीय प्रसाद खिलाकर मैं वापस आ गई। उसके दो दिन बाद भवन की सातवीं मंज़िल से कूदकर पति ने शरीर छोड़ दिया (अपने कर्म ही मानव को सज़ा देते हैं, दूसरा कोई नहीं। मैंने तो कभी उसका बुरा नहीं चाहा, भगवान से दुआयें ही की, आत्मग्लानि की आग ही उसकी ऐसी मौत का कारण बनी)। मैं जिस मकान में रहती थी, वह मेरे प्लाट के बदले पति ने शरीर छोड़ने से पहले मेरे नाम करा दिया था। अब मैं कर्मबन्धनमुक्त हो गई थी और आबू आना चाहती थी पर शरीर की बीमारी के कारण छुट्टी नहीं मिली। फिर दादी कमलमणि के पास एक वर्ष सेवाकेन्द्र पर रही। बार-बार अंदर दिल में आता कि अपना सब कुछ सफल कर आबू जाकर रहूँ। अंत में बाबा ने आत्मप्रकाश भाई (संपादक) को निमित्त बनाकर मेरी यह इच्छा भी पूरी की। मैं अपना मकान बेचकर आबू आ गई। शान्तिवन के साथ लगता घर मुझे मिल गया। बाबा के मधुबन बेहद घर में मैं बेहद खुश हूँ। मैं अपने को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि बाबा ने मेरी इच्छा – मेरा अंतिम समय बाबा के घर में बीते – पूरी की। मैं चाहती हूँ कि मेरा सब कुछ जीते-जी बाबा के यज्ञ में सफल हो, इसलिए मैंने अपना आबू का मकान बाबा के ग्लोबल हॉस्पिटल के नाम करा दिया है। रिश्तेदार कहते थे कि तेरे तो बच्चे नहीं हैं, अकेली रहती है, बुढ़ापे में कौन तेरी सेवा करेगा। बाबा अभी बेटा बनकर मेरी सेवा कर रहा है। ❖

नववर्ष की बधाई

ब्रह्माकुमारी अंजना, अमृतसर

नववर्ष की हो आप सबको बधाई
खाओ व बाँटो मिलकर दिलखुश मिठाई
मन में हो शुभभावना, सबकी भलाई
अतीत की व्यर्थ बातों को दे दो विदाई
छोड़ दो, क्या, क्यूँ, कैसे की भाषा पराई
पुराने स्वभाव–संस्कार को कर दो गुड बाई
उमंग–उत्साह के पंखों से करते रहो फ्लाई
आत्म रूप में तुम सब हो भाई–भाई
बाबा ने आकर अनमोल शिक्षा बताई
वाह मीठे सिकिलधे बच्चे कह हिम्मत बढ़ाई
परमधाम अपने घर की स्मृति दिलाई
पसंद है बाप को दिल की सच्चाई–सफाई
संगम की इस वेला में, कुछ कर लो कमाई
सावधान! विनाश की घड़ियाँ निकट हैं आईं
मायाजीत बनने से मिलेगी सतयुगी राजाई
हर श्रेष्ठ कर्म में होते, बाप आप सहाई
मर्यादाओं को तोड़कर, होगी जग हंसाई
मनमनाभव का मंत्र याद रखो, बहनो व भाई
बाबा शब्द में, सर्व संबंधों की सैक्रीन समाई
एक बाबा है अपना, बाकी सारी दुनिया पराई
मिलजुल कर जोश से, सब सेवा करो खुदाई
सर्व के सहयोग से दुनिया होगी सुखदाई।

प्यारे बाबा ने दिए दो अनमोल तोहफे

• डॉ.मलिकराज करन, दिल्ली (टैगोर पार्क)

सहारनपुर में, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा मुझे परमपिता परमात्मा के सत्य ज्ञान का परिचय मिला। आश्रम पर दो बहनों – बहन चन्द्रमणि व बहन प्रकाश इन्द्रा से मुलाकात हुई। उनको देखकर अनुभव हुआ कि सफेद वस्त्रों में चैतन्य देवियाँ पवित्रता की आभा से संपन्न हैं। यह भी अंतर्मन में अनुभव हो रहा था कि ये मेरे लिए नई नहीं हैं। इनसे पुरातनकाल का समीप का पवित्र संबंध है। जितने भी मेरे प्रश्न थे, वे सबके सब धराशायी हो गये।

मधुर शब्दों ने किया आकर्षित

उनके मधुर शब्दों ने मुझ आत्मा को अपनी ओर आकर्षित करके अपना बना लिया। वे शब्द थे – भाईजी, आपका इस सेन्टर पर पधारना मंगलमय हो। 'आप', 'भाईजी' और 'मंगलमय' – इन तीन शब्दों ने मुझे मोहित कर दिया। उस दिन से मैं उनका छोटा पवित्र भाई बन गया और वे दोनों मेरी दैवी बहनें बन गईं। जैसे उन्होंने कहा, पालन करता गया। प्रात: स्नान कर चार बजे क्लास में पहुँचना, बाबा से योग लगाना, प्यारी मधुर वाणी सुनकर, बाबा की सेवा करके फिर लौकिक घर जाना – यह नियम पक्का बन गया था। कुछ समय के बाद नौकरी पर मेरठ चला गया। उस समय दीदी कमलसुन्दरी अर्थात् दीदी देवताजी मेरठ में योग सिखलाती थी। वहाँ भी रोज जाने का नियम बना लिया। प्रभु की अलौकिक व पारलौकिक शिक्षा की ऐसी लगन लगी जो छूटने का नाम न लेती थी।

बाबा से मिलन

एक बार पुन: सहारनपुर जाना हुआ। उन दिनों शिवबाबा को भोग 12 बजे दोपहर को स्वीकार कराया जाता था। दीदी भगवती जी संदली पर भोग सहित विराज गईं। बाकी सात-आठ भाई-बहनें सामने दृष्टि लेने के लिये बैठ गये। चंद क्षणों में दीदी जी का सूक्ष्म शरीर, सूक्ष्म भोग लेकर वतन में बाबा के पास पहुँच गया और उस दिन मुझे भी प्यारे बाबा से मिलन का बहुत सुन्दर अनुभव हुआ।

सहायक ऑफिसर ने सुनाए कड़े शब्द

दीदी से भोग लेकर मैं ड्यूटी पर दो घंटे लेट पहुँचा। मन ही मन बाबा को अपना साथी बनाकर रखा और चिन्तन करता रहा, 'मैं बाबा का, बाबा मेरा, यही करेगा फैसला तेरा।' सहायक ऑफिसर ने कड़े शब्दों में कहा, साहबजादे, अब तक कहाँ थे? दफ्तर के काम की चिंता नहीं है क्या? तुम हमारे काम में सहयोग देने हेतु आये हो, तुम बड़े लापरवाह क्लर्क हो, तुम्हारा भविष्य काल की कोठरी में बंद होने वाला प्रतीत हो रहा है। बचना चाहते हो तो अब से सावधान हो जाओ।

बाबा के भोग का कमाल

मैंने हाथ जोड़कर प्यारे शिवबाबा के द्वारा मिला हुआ भोग उन्हें थमा दिया और सारा वृत्तांत भी सुना दिया। वे भी भोले शंकर के भक्त थे। जैसे ही प्रसाद ग्रहण किया, उनकी वाणी में मधुरता आ गई। मैंने सच-सच बताया तो उनका हृदय गद्‌गद हो गया और बोले, किसी किस्म की चिन्ता मत करो, कोई पूछेगा तो उसे मैं संतुष्ट कर दूँगा। यह पहला तोहफा मुझे प्यारे बाबा से मिला, जो अधिकारी मेरा सहयोगी बन गया।

असंभव हुआ संभव

एक बार फार्मेसिस्ट की ट्रेनिंग के लिए रोजगार दफ्तर में नोटिस लगा। इस ट्रेनिंग के लिए केवल साइंस सब्जेक्ट वाले ही फार्म भर सकते थे। मेरे पास आर्ट सब्जेक्ट होने के कारण फार्म भरने में असमर्थ होते हुए भी मैंने शिवबाबा की श्रीमत का पालन करते हुए फार्म भर दिया और जो कुछ मेरे पास पेपर थे, साथ में लगा दिये। मुझे पता था, मैं सेलेक्ट नहीं हो सकता। फिर भी बाबा की याद में यह कार्य कर दिया। (शेष..पृष्ठ 30 पर)

ब्रह्मा बाबा के साथ के कुछ बहुमूल्य अनुभव

• ब्रह्माकुमार प्रेम प्रकाश, नोएडा

ज्यों-ज्यों 18 जनवरी का दिन समीप आता जाता है, प्यारे ब्रह्मा बाबा के साथ बिताये हुए अविस्मरणीय दिन मानस-पटल पर चलचित्र की भाँति आते-जाते हैं। उन दिनों को याद करके मन भावुक हो उठता है और इसी भावविभोर स्थिति में आँखों से आँसू भी गिरने शुरू हो जाते हैं। साधारण बातचीत में भी बाबा के मुख से जो बोल निकलते थे, वे कैसे वरदान सिद्ध होते रहे हैं, उनका अनुभव जीवन में आज भी स्पष्ट महसूस होता है। बाबा के साथ के कुछ बहुमूल्य अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूँ –

अन्धों की लाठी

बात सन् 1960 की है, ज्ञान में आये हुए एक-दो मास ही हुए थे, मैंने पहला पत्र बाबा को लिखा जिसमें किसी आत्मा को ज्ञान समझाने का समाचार दिया था। बाबा का उत्तर आया, 'ज्ञान प्रेम प्रकाश बच्चे का पत्र पाया, बच्चे ने अंधों की लाठी बनकर सेवा की। बच्चे ऐसे ही अंधों की लाठी बनकर सेवा करते रहना।' आज भी जब बाबा की मुरली में 'अंधों की लाठी' शब्द आता है तो बाबा के उच्चारे हुए ये महावाक्य, जो बाबा ने 50 वर्ष पूर्व मुझे पत्र में लिखे थे, याद आ जाते हैं और मन उमंग व उल्लास से भर जाता है।

समाचार-पत्रों के माध्यम से सेवा

बाबा कहा करते थे, जो आत्मायें शरीर छोड़ देती हैं, उनके संबंधी समाचार पत्रों में श्रद्धांजली समाचार डालते हैं कि उनका फलां संबंधी स्वर्ग पधार गया (Left for heavenly abode)। ऐसे लोगों को पत्र लिखकर समझाना चाहिये कि स्वर्ग कहाँ है और कब होता है। मैंने एक पत्र अंग्रेजी में बनाया और जब पहली बार बाबा से मधुबन में मिला तो वह लिखत बाबा को दिखाई। बाबा ने उसमें एक-दो प्वाइंट बदलकर कहा, बच्चे, इसके द्वारा सेवा करना। बाबा ने यह बात बड़ी दीदी (दीदी मनमोहिनी) को भी बताई और कहा कि बच्चा लिखने में होशियार है। दिल्ली आकर मैं प्रतिदिन अंग्रेजी के एक-दो अखबार देखता था और जिन आत्माओं के शरीर छोड़ने का समाचार होता, उनके संबंधियों को अपने हाथ से पत्र लिखता था। उनमें से बहुत लोगों के उत्तर आते थे और वे कोर्स करते थे। यह सेवा कई वर्षों तक चली।

ज्ञानमय जीवन में बाधा न आए

सन् 1962 में बाबा दिल्ली कैन्ट में मेजर वर्मा की कोठी पर आये थे,

उन दिनों भारत और चीन का युद्ध चल रहा था। आर्मी में Commissioned Officer की आवश्यकता थी। मेजर वर्मा ने मुझे कहा, आप आर्मी में आवेदन पत्र दो, इंटरव्यू में मैं आपको पास करा दूंगा। मैंने फार्म भर दिया। फिर मुझे विचार आया कि फॉर्म भेजने से पहले बाबा को यह समाचार दे दूँ। मेरी बात सुनकर बाबा ने कहा, बच्चे, भारत का आज चीन के साथ युद्ध है, कल पाकिस्तान के साथ होगा, तुम्हें तो बॉर्डर पर भी जाना पड़ सकता है, बदली भी यदा-कदा होती रहेगी, इससे ज्ञानमय जीवन में बाधा पड़ेगी, इसलिए बाबा की सहमति नहीं है। मैं और मेजर वर्मा भी बाबा की इस बात से सहमत हो गये।

खाना बनाने की ट्रेनिंग

दो-तीन वर्ष के बाद मेरी नियुक्ति भारत के मौसम विभाग (Indian Meteorological Deptt.) में

हुई और मुझे लखनऊ में अमौसी एयरपोर्ट के नजदीक मौसम विभाग के ऑफिस में रिपोर्ट करने के आदेश मिले। अमौसी एयरपोर्ट, लखनऊ शहर से काफी दूर है और वहाँ कोई सेन्टर भी नहीं है। मैंने यह समाचार बड़ी दीदी को सुनाया तो उन्होंने बिल्कुल मना कर दिया कि तुम्हें खाने-पीने में दिक्कत आयेगी, खाना तुम्हें बनाना आता नहीं, बीमार हो जाओगे तो तुम्हारी देखभाल कौन करेगा? दीदी की बात सुनकर मैंने वहाँ ज्वायन करने का विचार छोड़ दिया और वैसे भी मेरी लौकिक माँ मुझे बाहर जाने नहीं देना चाहती थी। अब देखिये, तीन-चार मास के बाद मैं जब मधुबन गया और कमरे में बाबा से मिल रहा था तो बड़ी दीदी भी वहाँ उपस्थित थीं। बड़ी दीदी ने बाबा को बताया कि बाबा, मैंने प्रेम प्रकाश को लौकिक सर्विस के लिए बाहर जाने की छुट्टी नहीं दी क्योंकि इसको खाना तो बनाना आता नहीं और खाना ठीक से नहीं खायेगा तो बीमार हो जायेगा। बाबा ने एक क्षण सोचा और कहा कि नहीं दीदी, बच्चे को खाना बनाना मैं सिखाऊँगा। उसी समय बाबा मेरा हाथ पकड़कर भण्डारे में ले गये, चकले पर रोटी बेली और तवे पर सेंकी। एक भाई जो सब्जी बना रहा था, उसके पास ले गये और सब्जी बनाने की विधि बताई। बात 45 वर्ष पुरानी है परंतु बापदादा तो त्रिकालदर्शी है और भृगुऋषि बाबा बच्चों की जन्मपत्री को जानता है। शायद बापदादा को एहसास था कि बच्चे को ज़िन्दगी में कभी भी स्वयं खाना बनाना पड़ सकता है।

बाबा की हर बात में प्यार और अपनापन

'प्रेमप्रकाश बच्चा तो बुद्धु है', जी हां यह खिताब (Title) मुझे बाबा की ओर से मिला था। हुआ यूँ कि एक बार कनाट प्लेस, नई दिल्ली में एल.आई.सी. ग्राउंड में एक बड़ी प्रदर्शनी में हमें बहुत बड़ा स्टाल मिला था जिसमें हमारी प्रदर्शनी लगाई गई थी तो माइक पर यह सूचना दी गई कि उस दिन जर्मनी एम्बेसी का एक उच्च अधिकारी प्रदर्शनी में आ रहा है और वह सभी मण्डपों में चक्कर लगायेगा। प्रदर्शनी के चित्रों पर उन्हें अंग्रेजी में समझाना था, तो आलराउन्डर दादी (गुलजार दादी की लौकिक माँ) ने मुझे कहा, आप उन्हें प्रदर्शनी का चक्कर लगवाइये। अब ये लोग व्यस्त होने के कारण हरेक स्टाल में अधिक समय तो नहीं दे पाते। जैसे ही वे हमारे स्टाल में आये, मैंने उन्हें प्रदर्शनी का लक्ष्य बताकर चित्रों पर बहुत संक्षेप में व्याख्या दी और वे तीन-चार मिनट में ही स्टाल का चक्कर लगाकर अगले स्टाल में चले गये। अगले दिन मैंने पत्र द्वारा बाबा को समाचार भेजा। अगले सप्ताह बड़ी दीदी ने मुझे फोन किया कि आपके लिए बाबा का पत्र आया है, सुनाऊँ? उन्होंने दोबारा पूछा, सुनाऊँ? मैंने कहा, दीदी, सुनाइये। दीदी ने कहा कि बाबा ने लिखा है कि प्रेमप्रकाश बच्चा तो बुद्धु है। बच्चे ने उसे शिवबाबा का परिचय तो अच्छी प्रकार से दिया ही नहीं। मैं चकित-सा रह गया। चार मास के बाद मैं मधुबन गया और जब बाबा के कमरे में गया (बाबा उस समय चारपाई पर लेटे हुए थे), तो बड़ी दीदी ने कहा, बाबा, बुद्धु बच्चा आया है। प्रेम के सागर बाबा मुझे देखकर मुसकराये और गले लगा लिया। दूसरी बार फिर मुझे बुद्धु का टाइटल मिला जब मैं बाबा के साथ बैडमिन्टन खेल रहा था। मैं बाबा की टीम में था। एक शॉट मेरे से पूरा नहीं उठा और वह नेट पर ही रह गया। बाबा ने कहा, ए बुद्धु! बाबा के ऐसे टाइटल में भी कितना प्यार और अपनापन भरा होता था, वह सचमुच अनुभव की चीज़ है।

झोंपड़ी में बाबा से मुलाकात

जयपुर किशनपोल बाज़ार में जब भारत का पहला म्यूज़ियम बन रहा था तो बिल्डिंग की पहली मंज़िल के बाहर की साइड में कुछ चित्र लगाने थे। उस समय मैं ग्वालियर में एक बड़ी प्रदर्शनी के अवसर पर गया हुआ था। वहाँ दिल्ली से जगदीश भाई तथा बड़ी दीदी भी पहुँचे हुए थे। जगदीश भाई तथा दीदी ने मुझे कहा कि आप

मधुबन जाओ और बाबा से इन चित्रों को फाइनल कराओ। मधुबन में बाबा ने झोंपड़ी में मुझे बुलाकर चित्रों के ऊपर वार्तालाप किया और चित्र फाइनल किये। वाह मेरा भाग्य! स्वयं भगवान ने अपने रथ द्वारा मेरे से चित्रों पर बातचीत की। एक अन्य अवसर पर झोंपड़ी में ही मैंने बाबा के साथ विदेशियों को संदेश देने की संभावनाओं के बारे में बातचीत की। उन दिनों विदेश सेवा तो बिल्कुल थी ही नहीं और अक्सर बाबा मुरलियों में कहा करते थे कि विदेश में रहने वाले बच्चे भी जागेंगे और भारत में आयेंगे। आज बाबा की झोंपड़ी और बाबा के कमरे में जाकर वे पुरानी यादें ताज़ा हो उठती हैं और मैं अपने को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ।

जीवन के इस लंबे आध्यात्मिक सफर में अनेक तूफान और बाधायें आईं परंतु प्यारे बाबा के संग बिताये हुए अविस्मरणीय लम्हे, उनके वरदानी बोल याद आ जाते हैं और एक नई शक्ति व उमंग का संचार होने लगता है। वास्तव में तो वह जीवन ही क्या जिसमें संघर्ष न हो परंतु परमात्मा के एक बल और एक भरोसे के आधार पर उन्हें पार करते हुए चल रहा हूँ। किसी ने ठीक ही कहा है

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धारायें प्रतिकूल न हों।।

प्यारे बाबा ने दिए..पृष्ठ 27 का शेष

हज़ारों की गिनती में फार्म भरे गये थे और रिक्तियाँ भी सैकड़ों थी। दो-तीन मास बाद चयनित उम्मीदवारों की लिस्ट देखी तो उसमें मेरा नाम भी अंकित था। देखकर चकित-सा रह गया। मैंने सोचा, मेरा बाबा ही चेयरमेन था या एम.पी. था जिसने असंभव को संभव कर दिखाया। बाबा का बारंबार शुक्रिया अदा करता हूँ। यह दूसरा तोहफा बाबा से प्राप्त हुआ।

मैं काबिल न था इसके, काबिल बनाया है तूने मुझे
यह मंज़िल न थी मेरी, फिर भी पहुँचाया है तूने मुझे

मन बाबा में लगा दो तो मुराद स्वयं पूरी हो जाती है। ट्रेनिंग पूरी होने के बाद नौकरी भी कई स्थानों पर मिली। सेन्टर भी पास में मिला। प्यारे बाबा के अहसान हैं मुझ पर इतने। एक जन्म उन्हें पूरा करने के लिए कम है। व्यर्थ संकल्पों पर कंट्रोल करना, याद की यात्रा पर निरंतर रहना, कम बोलना पर मीठा बोलना, मधुर वाणी से अपनी जीवन माला के मणके पिरोना, बहन के आदेश को बाबा का फरमान समझना, किसी से रूठना नहीं, योगी बन सबको सहयोग देना – ये मैंने कुछ संकल्प लिये हुए हैं। यदि सभी ऐसा करें तो विश्व परिवर्तन सहज है। ❖

प्यारे बाबा, बारंबार प्रणाम

शिवबाबा ने जिनके द्वारा, हमको लिया संभाल,
अठारह जनवरी अव्यक्त दिवस, आता है हर साल।
संगमयुग में शिव की वाणी, सुन कर हुए निहाल,
ब्रह्मा ने हम सब बच्चों को, किया है मालामाल।
परमपिता का रथ बनकर भी, खुद को कहा दलाल,
तन–मन–धन से हुए समर्पण, छोड़ सभी जंजाल।
ब्रह्मा बाबा ने हम सबकी, बदली है हर चाल,
पाँच विकारों के चंगुल से, हमको लिया निकाल।
ब्रह्मा बाबा आप न मिलते, तो क्या होता हाल?
श्रापित कर माया हमको, कर देती बेहाल।
शिवशक्ति पांडव सेना के, आप हो भव्य भाल,
याद आती है सबको आपकी पालना बेमिसाल।
आपके कदमों पर चलकर, करेंगे हम भी कमाल,
हम ब्रह्मा–वत्सों का जीवन, बनेगा एक मिसाल।
स्वीकारो हे प्यारे बाबा, बारंबार प्रणाम,
आप मिल गये बाबा हमको, बाकी अब क्या काम।
हाथ पकड़कर साथ आपके, सतयुग में जायेंगे,
देवस्वरूप को धारण करके, सुख कितना पायेंगे।

– ब्रह्माकुमार प्रदीप, मीरजापुर

राष्ट्रीय युवा दिवस पर विशेष..

हृदय परिवर्तन

• ब्रह्माकुमारी शकुंतला, डिगावा मण्डी

गाँव से एक ही बस शहर में जाती थी जिसमें वह और गाँव के कई अन्य लड़के पढ़ने के लिए जाते थे। प्रतिदिन की भाँति आज भी वे बस की पिछली सीट पर ही बैठे थे क्योंकि पीछे बैठकर कभी मोबाइल में गेम खेलना या अन्य कोई शरारत करने की अधिक स्वतंत्रता मिल जाती थी। आज उनकी नज़र बस की सीट के पीछे लगे हैन्डल पर पड़ी जो एक तरफ का स्क्रू निकल जाने से लटक रहा था। आर्यन उस लटकते हैन्डल से खेल रहा था। खेलते-खेलते अचानक उसे एक नई शरारत सूझी। उसने साथ बैठे अभिनव से कहा, 'तुम बहुत अच्छे बॉक्सर हो, उस हैन्डल को एक ही झटके में तोड़कर दिखाओ ना?' 'यदि तोड़ दूँ तो?' – अभिनव ने कहा। 'मैं तुम्हें होटल में मनपसंद खाना खिलाऊँगा' – आर्यन खुशी से चहक कर बोला। इस प्रकार शर्त तय होने पर अभिनव ने पूरा जोर लगाकर हैन्डल को झटका मारा लेकिन हैन्डल नहीं टूटा। शर्त अनुसार अब आर्यन की बारी आई तो उसने हैन्डल को झटकने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी। अगले ही पल हैन्डल उसके हाथ में था। इस खुशी में उसके मुख से जोर से निकल पड़ा, 'हुर्रे!' उत्सुकतावश बस में बैठी सभी सवारियों ने पीछे मुड़कर देखा। 'क्या हुआ?' की आवाज़ों के बीच ड्राइवर भी सामने लगे शीशे में से यह जानने की कोशिश कर रहा था कि कहीं कुछ अप्रिय तो नहीं हो गया। लेकिन यह कोई नई बात नहीं थी। वे रोज़ ही ऐसा कुछ न कुछ करते थे और बस में बैठी सवारियाँ भी लगभग जान जाती थी कि ऐसे शरारती विद्यार्थी अक्सर अपनी शरारतों को अंजाम देने के लिए पिछली सीटों पर ही बैठते या खड़े रहते हैं, वहाँ ये सब करने की कुछ ज्यादा ही छूट मिल जाती है।

अब आर्यन जीता था इसलिए तय कार्यक्रम अनुसार अभिनव को पार्टी देनी थी। तय हुआ कि शहर के सबसे अच्छे होटल 'झंकार' में पार्टी दी जाये। इसलिए बस से उतरकर आज उनके कदम कालेज की ओर नहीं अपितु होटल की ओर मुड़ गये। रास्ते में अभिनव ने जेब पर हाथ रख अपने को तसल्ली दी, 'पूरे 1100 रुपये हैं, कम तो किसी भी हालत में नहीं पड़ेंगे। खुदा का शुक्र है जो आज जेब गर्म है।' उसकी माँ दमे की मरीज है और वह महीने भर की दवा एक ही बार अपने बेटे से शहर से मंगवा लेती है। अभिनव को मालूम है कि पिताजी के जाने के बाद माँ कैसे मज़दूरी करके उसे भी पढ़ाती है और अपनी बीमारी का भी इलाज करवाती है। ठेकेदार भी किसी की गरीबी को क्या जाने! माँ उसके घर के दस चक्कर लगाती है तब कहीं वह मज़दूरी के पैसे हाथ पर रखता है। एक बार तो माँ ने उससे भी कहा था, 'बेटा, अब तू भी तो सयाना हो गया है, एक आध बार तू भी चला जाया कर ठेकेदार से पैसे माँगने।' पर उसने माँ को यह कहकर इंकार कर दिया था कि उसे पैसे-वैसे माँगने में शर्म महसूस होती है। उसने इन सब विचारों को झटका देकर पुनः अपनी जेब पर हाथ रखा और इत्मीनान की सांस ली, 'चलो आज की पार्टी तो यादगार रहेगी।'

होटल पहुँचते ही अभिनव ने बैरे को आर्यन के मनपसंद भोजन के साथ-साथ शराब का भी ऑर्डर दे दिया। आज पहली बार उसने खुले दिल से पार्टी दी थी। दोनों ने खूब आनन्द लिया और जम कर पी भी। आज अभिनव को किसी रईसज़ादे

की-सी शान अनुभव हो रही थी इसलिए उसने बैरे को अच्छी-सी टिप भी दी और काउंटर पर आकर बिल चुका दिया। होटल से बाहर आकर जब घड़ी पर नज़र डाली तो आर्यन ने कहा, यार! अब कालेज का तो कोई समय नहीं रह गया है, क्यों न पार्क में चलकर गपशप की जाए? शराब भी अपना प्रभाव दिखाने लगी थी। दोनों के पैर लड़खड़ा रहे थे। किसी तरह वे पार्क में पहुँचे। अभी पहुँचे ही थे कि अभिनव को बेहोशी-सी आने लगी। या तो उसने ज्यादा पी ली थी या शराब में कुछ मिलावट होगी। थोड़ी ही देर में अभिनव अचेत हो गया। आर्यन उसकी बिगड़ती हालत को देखकर किसी अनहोनी आशंका के भय से वहाँ से चुपके से खिसक गया।

पार्क में ही किसी घूमने वाले ने जब अभिनव को अचेतावस्था में देखा तो मेनरोड पर जाकर कालेज से लौटते एक लड़के को इशारे से बुलाकर कहा, एक लड़का पार्क में बेसुध पड़ा है, जाकर संभालो भाई, तुम्हारे कालेज का ही लगता है। शुभम जब पार्क पहुँचा तो देखकर हैरान रह गया कि अरे! यह तो अपने ही गाँव का अभिनव है। उसके मुख से निकलते झाग को देखकर उसने एक मिनट भी गंवाना उचित नहीं समझा और ऑटो वाले को बुलाकर उसे ऑटो में डाल फौरन अस्पताल की ओर चल पड़ा। डाक्टरों की तत्परता से उसे जल्दी ही होश आ गया। शुभम की गोदी में सिर टिकाये आर्यन पागलों की तरह डाक्टर, अस्पताल, ग्लूकोज, शुभम को घूरे जा रहा था। अब उसे सब कुछ याद आ गया था। 'कहो दोस्त, अब कैसा लग रहा है?' – शुभम ने अभिनव से पूछा तो लड़खड़ाती आवाज़ में अभिनव बोला – 'यार! आज तो तुमने हनुमान बनकर लक्ष्य से भटके अपने भाई को मूर्छित से सुरजीत कर दिया, तुम न होते तो शायद आज अभिनव जीवित न होता। तुमने तो मुझे नया जन्म ही दे दिया दोस्त!' तभी अभिनव का हाथ शुभम की जेब से जा लगा जिसमें लोहे के औजार खनकते महसूस हुए। उसने उत्सुकतावश शुभम की जेब में हाथ डाला तो बड़ा आश्चर्य हुआ, अरे, कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थी की जेब में ये प्लास..ये पेचकस..नट-बोल्ट का क्या काम! उसने ठिठौली करते हुए कहा, 'भाई, तुम पढ़ाई-वढ़ाई छोड़कर किसी मिस्त्री के पास काम सीखने तो नहीं जाने लगे हो?'

शुभम ने बहुत प्यार से उसके बालों पर हाथ फेरते हुए कहा, 'नहीं यार! ऐसा नहीं है। आपको मालूम ही है कि अपने गाँव से शहर तक एक ही सरकारी बस आया-जाया करती है। मैं रोज़ बस में आते-जाते देखता कि कहीं तो खिड़की का पेच ढीला है और कहीं सीटों के पीछे लगे हैण्डल झूल रहे हैं। आज मैं घर से ही ये सारे औज़ार साथ लेकर आया था और आज मैंने बस में काफी तो ठीक कर दिये थे। देखो आर्यन, वैसे ही गाँवों तक एक-आध बसें पहुँच पाती हैं और यदि हम उनकी हिफाज़त नहीं रखेंगे तो अंजाम हमें ही भुगतना पड़ेगा। बसें सरकारी हों या प्राइवेट – जब हम उनका प्रयोग करते हैं तो उनकी हिफाज़त रखना भी अपना धर्म बनता है। अब अभिनव की आँखों से आँसुओं की गंगा-जमना बहे जा रही थी। उन आँसुओं के आर-पार उसे माँ का दमे के कारण खाँसते-खाँसते सारी रात बैठकर गुजारना स्पष्ट दिखाई दे रहा था और साथ में दिखाई दे रहा था, सरकारी संपत्ति का नुकसान, पैसे का नुकसान, कालेज मिस, चरित्र की बर्बादी। इतने थोड़े से समय में कितना कुछ हो गया! उफ! वह चिल्ला पड़ा, 'शुभम, मुझे बचा लो, इस दलदल से मुझे निकाल लो।' 'अब तो तुम बच भी गये हो और दलदल से भी निकल आये हो' – शुभम ने उसकी आपबीती सुनकर उसे प्यार से सहलाते हुए कहा। अभिनव के पूछने पर शुभम ने बताया कि अपने गांव में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा

'युवा विकास और चरित्र निर्माण' के विषय पर जो कक्षाएँ चल रही हैं, पिछले कुछ समय से लगातार वह वहाँ जा रहा है। ऐसी सकारात्मक सोच और समाज निर्माण के कार्य करने की प्रेरणा और सामर्थ्य उसको वहाँ से मिल रहे हैं। अभिनव ने महसूस किया कि शुभम की बातें सुनते-सुनते परिवर्तन की शक्तिशाली तरंगें उसके भी हृदय को छूने लगी। अब वह भी एक नई आश और विश्वास लिए अस्पताल का बिस्तर छोड़ उठ खड़ा हुआ और उससे भी पहले उठ खड़ा हुआ उसके भीतर बैठा एक चरित्रवान युवा! ❖

ब्रह्मा बाबा के साथ के यादगार पल

ब्रह्माकुमार बी.एस.त्यागी, शान्तिवन

पांडव भवन में कुछ मज़दूर चूना सफेदी का कार्य कर रहे थे। अचानक एक मज़दूर को उलटी हुई और वह बहुत घबरा गया। बाबा ने उस मजदूर को देखकर मुझसे कहा, इसको डॉक्टर के पास ले जाओ। मैं उस भाई को सरकारी हॉस्पिटल में ले गया। वहाँ डॉक्टर ने दवा पिलाई और कुछ गोलियाँ दीं जो हर दो घंटे बाद देनी थी। जब उसको वापस लेकर आया तो बाबा ने कहा, इसको इसके घर पर छोड़ आओ। मैंने उसके साथी मज़दूरों से कहा तो उसका एक साथी उसे साइकिल पर ले जाने को तैयार हो गया। मैंने बाबा को बताया तो बाबा ने कहा, अच्छा है लेकिन उसको कुछ फल, संतरा, अंगूर आदि देकर भेज दो। मैं भंडारे में गया तो वहाँ दोनों फल मिल गये और उसे देकर भेज दिया।

पांडव भवन में जिस स्थान पर आज बाबा की झोंपड़ी तथा मेडिटेशन हॉल है, वह जगह उस समय खाली थी, वहाँ एक बड़ा बगीचा था जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के पौधे थे तथा कुछ जगह में मेथी, पालक, गाजर, शलगम आदि उगाते थे। प्रात: क्लास के बाद बाबा मुझे साथ लेकर सीधे बगीचे की ओर चले गये, वहाँ जाकर बोले, देखो, माली बीमार है और बगीचा सूख रहा है, इसका क्या करना होगा? मैंने कहा, बाबा इसमें पानी डाल देते हैं। बाबा बोले, यह जो पालक, मेथी की क्यारियाँ हैं, ये तो बिल्कुल ही सूख चुकी हैं, इनका क्या करना है? मैंने कहा, इनमें पानी भरकर फिर जमीन की फावड़े से खुदाई कर दुबारा से बीज बोना पड़ेगा। बाबा बोले, कल तक यह कार्य पूरा हो जायेगा? मैंने कहा, जी बाबा। 'अच्छा शुरू करो', यह कहकर बाबा अपने कमरे में चले गये। मैंने पार्टी में आये हुए चार भाइयों को साथ लेकर, कुएँ से पानी निकालकर फूलों में पानी डाला और फिर खाली जगह को पानी से भर दिया। पानी के सूखने पर सायंकाल उस सारी जगह की फावड़े से खुदाई कर दी। बाबा बीच-बीच में देखते रहे और टोली खिलाते रहे। अगले दिन क्लास के बाद मैं अकेला ही खुरपे से खुदाई की हुई जगह पर क्यारियाँ बनाने लगा तो बाबा भी खुरपा लेकर आये और बोले, मैं आपसे अच्छी बनाऊँगा और पास ही बैठकर क्यारियाँ बनाने लगे। फिर बाबा बोले कि ईशू बच्ची के पास बीज हैं, वे लाओ। मैं बीज लाया और फिर बाबा के साथ मिलकर गाजर, शलगम, पालक, मेथी के बीज बोये। कहने का सार यह है कि बाबा सब कुछ जानते हुए भी हर बात बच्चों से कराते थे ताकि बच्चों का भाग्य बने। ❖

ब्रह्मा बाबा मेरे..पृष्ठ 16 का शेष

दिखावा करती हो। तुम्हें पाठ पढ़ाने के लिए मैंने तुम्हारा पेन चुराया था। इसके बाद मैं बाबा से मिलने आई और मैंने बाबा को कहा – बाबा, आपने मेरे लिए जो पेन भेजा था उसके लिए धन्यवाद। बाबा को तो ध्यान भी नहीं था। फिर मैंने बाबा को पेन वाली सारी कहानी सुनाई। बाबा सुनते-सुनते बोले – बच्ची, तुम्हारा पेन खोया तो तुमने इतना रोया? बाबा को यह बात थोड़ी अजीब लगी। जब मैंने यह सुनाया कि मेरी सखी ने पत्र और पेन मेरे गाउन में डाल दिया और पत्र में लिखी बात बाबा को बताई तो बाबा को हलकी हँसी आई और हल्की-सी मुस्कराहट के साथ बाबा ने कहा – अच्छा, बच्चियाँ ऐसा भी करती हैं! दिव्यता के शिखर पुरुष प्यारे ब्रह्मा बाबा को कलियुगी बचकानी बातें सुनकर आश्चर्य न हो तो और हो भी क्या? मैंने बाबा वाले पेन से परीक्षा दी और मुझे यह नशा है कि मैं बाबा के दिए पेन की बदौलत ही पास हुई हूँ। पेन खोना भी मेरा भाग्य बन गया। उसी के कारण मैं बाबा का भेजा हुआ पेन प्राप्त कर सकी और वह पेन मेरे लिए यादगार बन गया।

निराला था भागीरथ का रूहानी दुलार

दिसंबर, 1968 में मेरी पढ़ाई पूरी हो गई, स्कूल की छुट्टियाँ पड़ गई और मैं सामान लेकर बोर्डिंग छोड़कर पांडव भवन में आ गई। एक दिन शाम को बाबा साइलेन्स में टहल रहे थे। बहुत सारे बच्चे भी उनके पीछे-पीछे साइलेन्स में टहल रहे थे। वह दृश्य ऐसा लग रहा था जैसे कि आगे-आगे शिव हों और पीछे शिव की बारात हो। बाबा ने मुझे बुलाया और जयन्ती बहन के साथ आगरा के सेवाकेन्द्र पर जाने का मेरा कार्यक्रम बनाया। मैंने सोचा, ब्रह्मा बाबा मुझे कह रहे हैं तो मुझे करना ही है। मैं आगरा पहुँच गई। मेरा मन भी वहाँ लग गया। वहाँ का म्यूज़ियम भी मुझे पसंद आया। थोड़ा-थोड़ा ज्ञान समझाना भी मैंने सीख लिया लेकिन अचानक वो हो गया जिसके बारे में मैंने कभी सोचा नहीं था, मेरी समझ के अनुसार वह होना असंभव था। हुआ यह कि 18 जनवरी, 1969 की रात को मानवता के पिता, लाखों बच्चों के दिल के दुलारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने स्थूल देह त्याग कर अव्यक्त स्वरूप धारण कर लिया और 19 जनवरी की सुबह 3 बजे हमें समाचार मिला। मुझे बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ। मैंने कहा, ब्रह्मा बाबा नहीं जा सकते। सेन्टर के अन्य भाई-बहनों के साथ मैं आबू आई और हिस्ट्री हॉल में बाबा के पार्थिव शरीर को देखा। बाबा बेहद दिव्य व खूबसूरत लग रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो बाबा सो रहे हों। फिर अग्नि संस्कार हो गया। मुझे बेहद वैराग्य आया। बाबा से जो प्यार मुझ आत्मा को मिला है उसको बार-बार याद करके मैं साकार में उन्हें अपने पास महसूस करती हूँ, वे यादें ही मेरी धरोहर हैं। मुझे खुशी है कि साकार बाबा द्वारा मुझे इतनी अच्छी पालना मिली। पालना तो आज अव्यक्त द्वारा भी मिल रही है परन्तु आदिपिता, भागीरथ के प्यार-दुलार का मज़ा ही निराला था। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 19 से 22 जनवरी, 2011
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49 **वेबसाइट**: www.ghrc-abu.com
फैक्स: 238570 **ई-मेल**: drmurlidharsharma@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org